।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
डाक पंजीकरण संख्या–
UP MRD Dn-64/2018-20
दयानन्दाब्द १९५
मानव सृष्टि सं.- १९६०८५३११९
सृष्टि सं.- १९७२९४९११९

वर्ष–17 अंक–20 पौष कृ. 11 से पौष शु. 9 सं. 2075 वि. 1–15 फरवरी 2019 अमरोहा, उ.प्र. पृष्ठ–16 प्रति–5/–

टंकारा चलो...

३ मार्च से टंकारा में होगा भव्य बोधोत्सव

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में जायेगा आर्यों का विशाल जत्था

टंकारा (राजकोट)। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट प्रतिवर्ष ऋषि जन्मभूमि टंकारा में शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन करता है। इस वर्ष 3 से 5 मार्च तक यहां भव्य बोधोत्सव का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर 26 फरवरी से 4 मार्च तक आचार्य रामदेव के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन होगा। ट्रस्ट के मंत्री रामनाथ सहगल के अनुसार इस वर्ष डीएवी कॉलेज प्रबन्ध कत्री के प्रधान पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष होंगे तथा डीएवी ट्रस्ट के डॉ. रमेश आर्य एवं एस.के. शर्मा विशिष्ट अतिथि होंगे। कार्यक्रम में सत्यपाल पथिक व जगत वर्मा का भक्ति संगीत भी होगा।

टंकारा समाचार के संपादक अजय सहगल के अनुसार इस अवसर पर देशभर से बड़ी संख्या में आर्य विद्वान, संन्यासी वृन्द, नेतागण व प्रतिनिधि पधार रहे हैं।

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में लगभग 400 आर्यजनों का विशेष जत्था भी कार्यक्रम में विशेष रूप से सहभागिता करेगा।

ज्ञातव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की पावन जन्मभूमि टंकारा में ट्रस्ट का विशाल भवन, ऋषि जन्मभूमि, भव्य एवं आकर्षक यज्ञशाला, महर्षि दयानन्द गौशाला, उपदेशक महाविद्यालय तथा विशाल अतिथि भवन आज टंकारा की शोभा बढ़ा रहे हैं। यहां प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु पधारते हैं और कृतज्ञतापूर्वक युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को नमन करते हैं। टंकारा में किये गये भव्य निर्माण एवं वर्ष-वर्ष चलने वाली परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा जिसके महामंत्री रामनाथ सहगल व प्रधान डॉ. पूनम सूरी हैं तथा अजय सहगल टंकारा वाले सहित अन्य विशिष्ट महानुभाव प्रमुख सहयोगी हैं, को विशेष श्रेय जाता है। ट्रस्ट की ओर से विभिन्न प्रकल्प तथा ऋषि लंगर की व्यवस्था के लिए आर्थिक सहयोग देकर हम पुण्य के भागी बन सकते हैं। ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा-80जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

आगामी कार्यक्रम

◆ 3 से 5 फरवरी, 2019- आर्यसमाज, धाता, जिला फतेहपुर में वार्षिकोत्सव। ◆ 1 से 3 फरवरी, 2019- केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन, स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली। ◆ 1 से 3 मार्च, 2019- आर्यसमाज, पाणिनी नगर, जोधपुर में वार्षिकोत्सव। ◆ 22 से 24 मार्च, 2019- सलीमाबाद (गाजियाबाद) जन्मस्थली ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त। ◆ 29 से 31 मार्च, 2019- आर्ष गुरुकुल, दयानन्द वाणी, जिला-मधुबनी वार्षिकोत्सव।

धूमधाम से मनाई श्री चड्ढा जी की हीरक जयन्ती

अर्जुन देव चड्ढा के नाम डी.ए.वी. के प्रधान पूनम सूरी का पत्र

प्रिय श्री चड्डा जी,

आशा है, आप स्वस्थ और सानन्द हैं।

13 जनवरी, 2019 को आयोजित दिव्य अमृत महोत्सव में उपस्थित होने का निमंत्रण मिला, इसके लिए मैं आपके सुयोग्य पुत्रों और पुत्री सहित सभी परिवारजनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। जीवन के 75 बसंत पूर्ण होने पर आपको हार्दिक बधाई। आपने अपने जीवन को समाजसेवा और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में जिस तरह से लगाया हुआ है, वह हम सब लोगों के लिए प्रेरणादायक है। मेरा जब भी आपसे मिलना होता है या मैं कोटा आता हूँ तो आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता होती है।

मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको लम्बी, स्वस्थ और समृद्ध आयु प्रदान करें। आप इसी प्रकार समाजसेवा में लगे रहें और आने वाले युवाओं का मार्गदर्शन करते रहें। एक बार पुनः मैं और मेरी धर्मपत्नी आपको सपरिवार इस आयोजन पर हार्दिक बधाई देते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

शुभेच्छु- पूनम सूरी

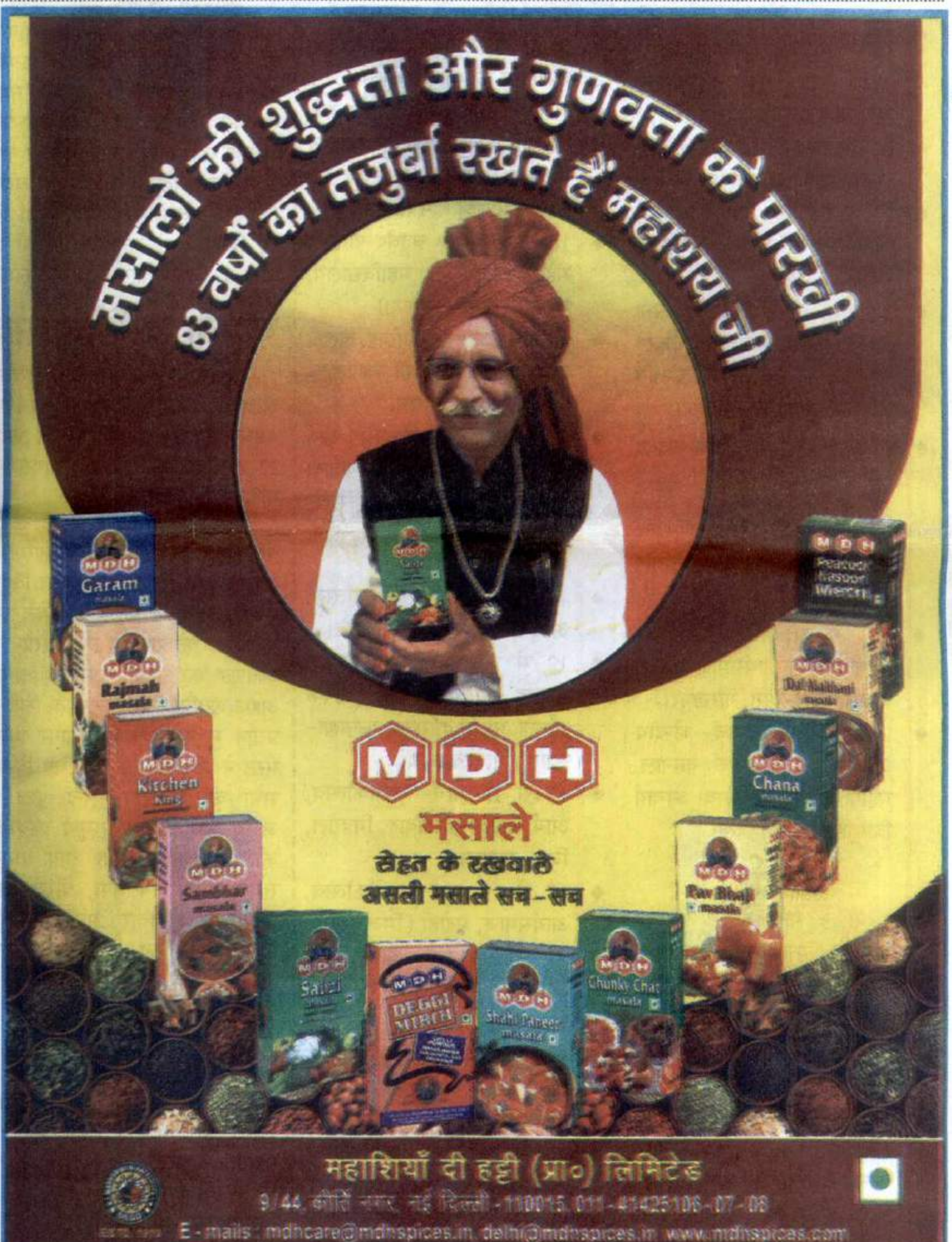

संक्षिप्त समाचार

बिजनौर। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम स्वाहेड़ी (बिजनौर) में 13 से 19 फरवरी तक अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

बागपत। चतुर्वेद पारायण यज्ञ ग्राम मुलसम, जिला बागपत में 22 से 28 फरवरी तक अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में होगा।

हरियाणा। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, पंचगांव (दादरी) का 29वां वार्षिकोत्सव 24 व 25 फरवरी को गुरुकुल में होगा।

देहरादून। 12 से 20 मार्च तक वैदिक साधना आश्रम योग साधना एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी के ब्रह्मत्व में होगा।

मिर्जापुर। 17 से 19 मार्च तक आर्यसमाज, भदोही (मिर्जापुर) का वार्षिकोत्सव आयोजित होगा।

बागपत। 10 से 17 मार्च तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव, महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, बरनावा (बागपत) में ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी की कर्मभूमि में होगा।

नई दिल्ली। 1 से 3 फरवरी तक पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली में 251 कुण्डीय अखिल भारतीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न होगा।

प्रयाग। प्रयाग की पावन भूमि (गंगा तट) पर कुंभ मेला-2019 सैक्टर-11 में (14 जनवरी से 19 फरवरी) के पावन अवसर पर वैदिक धर्म प्रचार शिविर में वेदमंत्रों द्वारा यज्ञ का आयोजन होगा।

आगामी कार्यक्रम

फरवरी

- 1 से 3 फरवरी- 251 कुण्डीय यज्ञ एवं आर्य सम्मेलन, पंजाबी बाग, दिल्ली-26
- 2 से 6 फरवरी- ऋग्वेद पारायण यज्ञ, वेद आश्रम, एदलकी गालन्द, जिला सवाईमाधोपुर। शोभा यात्रा- गुरुकुल मलारना चौड़ के ब्रह्मचारियों द्वारा।
- 3 फरवरी- प्रांतीय आर्य सम्मेलन, पंजाब, जालंधर में।
- 3 फरवरी- आर्य समाज, आत्मानन्द (बिजनौर) विष्णुमित्र वेदार्थी द्वारा यज्ञ।
- 3 फरवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि0) जालंधर की अंतरंग सभा के तत्वावधान में प्रान्तीय महासम्मेलन बरनाला में होगा।
- 13 से 20 फरवरी वार्षिक चतर्वेद पारायण यज्ञ। द्वारा- समस्त ग्रामवासी (ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की प्रेरणा से)। यज्ञ ब्रह्मा अरविन्द शास्त्री।
- 24 फरवरी से 1 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्यसमाज मुण्डेरा बाजार, चौरी-चौरा, गोरखपुर।
- 26 फरवरी से 1 मार्च- केन्द्रीय आर्य समाज कर्णपार्क करनाल, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव। आचार्य विष्णुमित्र पं0 योगेशदत्त।

मार्च

- 1 से 3 मार्च तक- सामवेद पारायण यज्ञ महर्षि दयानन्द उद्यान, जमानी, इटारसी, म0प्र0।
- 1 से 17 मार्च- आर्य समाज नगला, अटौर (गाजियाबाद)।
- 1 से 8 मार्च- चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ग्राम मुलसम (बागपत) (ब्रह्मा- आचार्य अरविन्द शास्त्री)। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त की प्रेरणा से समस्त ग्रामवासी गत वर्षों की तरह आयोजित कर रहे हैं। रहने एवं भोजन की व्यवस्था ग्रामवासियों की ओर से होगी।
- 3 मार्च- दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव व बौद्ध दिवस, मोतीनगर सामुदायिक भवन में वेद प्रचार माडल मोतीनगर के तत्वावधान में।
- 8 से 10 मार्च- आर्यसमाज, रमेशनगर का वार्षिकोत्सव।
- 10 से 17 मार्च चतुर्वेद पारायण यज्ञ, ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी द्वारा स्थापित महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, बरनावा में गांधी धाम समिति द्वारा।
- 10 से 17 मार्च- चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, गुरुकुल महाविद्यालय, बरनावा, जिला- बागपत।
- 10 मार्च- आर्य युवा परिषद, दिल्ली की पत्रिका राष्ट्रधर्म की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर यज्ञ।
- 11 से 17 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज नगला अटौर, गाजियाबाद। यज्ञ ब्रह्मा- विष्णुमित्र, भजनोपदेशक- पं0 कुलदीप, अंजलि एवं मोहित शास्त्री।
- 11 से 12 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्य समाज, इग्लास, अलीगढ़।
- 12 से 20 मार्च- योग साधना यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वैदिक साधना आश्रम देहरादून, यज्ञब्रह्मा- स्वामी चित्तेश्वरानन्द।
- 15 से 16 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्य समाज औरंगाबाद, मित्ररोल, जि0- पलवल।
- 17 से 19 मार्च- वार्षिकोत्सव, आर्यसमाज, भदोही (मिर्जापुर)।
- 23 से 24 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज, इस्लामनगर, जि0- सहारनपुर।
- 24 मार्च- अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, आर्य समाज, घण्टाघर, भिवानी, हरियाणा।
- 26 से 28 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्य समाज, बिन्दकी, सहारनपुर।
- 29 से 31 मार्च- वार्षिकोत्सव आर्ष गुरुकुल झरोली, सहारनपुर।

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल का ५४ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आनन्दवेश
शुक्रताल।

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल का 24वां वार्षिक महोत्सव गंगा स्नान के शुभ अवसर पर 20 से 23 नवम्बर तक अपूर्व धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर गुरुकुल की यज्ञशाला पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य यज्ञवीर शास्त्री, दिल्ली के ब्रह्मत्व में संपन्न हुआ। इस पवित्र यज्ञ में सुमित्रा देवी, भागीरथी, श्रीकृष्ण आर्य, हरवीर सिंह, डॉ0 महकार सिंह इस्सोपुर, रवीन्द्र कुमार, सुरेन्द्र सिंह, श्रद्धानन्द सपत्नीक, चौ0 मयंकार अलीपुरा, दीपक कुमार, मनोज कुमार आदि के सहयोग से यज्ञ संपन्न हुआ। इस यज्ञ को पूर्ण करने के लिए पवनवीर शास्त्री, आचार्य मनोकान्त शास्त्री, कमलकान्त शास्त्री, प्रेमशंकर मिश्रा वेदपाठियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। यज्ञ के सभी यजमानों को स्वामी आनन्दवेश संस्थापक ने वेद संदेश सुनाते हुए अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया। वेदों के और यज्ञ के लाभों का व्याख्यान किया। इस महायज्ञ में स्वामी चन्द्रदेव, स्वामी शिवानन्द, स्वामी सत्यवेश, स्वामी यशवीर, प्रेमशंकर मिश्र, आचार्य इन्द्रपाल व स्वामी भजनानन्द ने वेदमंत्रों पर अपना सारगर्भित उपदेश देकर श्रद्धालु यजमानों को प्रेरित किया। यज्ञ की पूर्णाहुति प्रवीण कुमार मिश्रा (जिला विद्यालय निरीक्षक) ने सपरिवार यज्ञ में दी। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने स्वागत गीतिका द्वारा उनका स्वागत किया।

महोत्सव के इस अवसर प[र] आर्य सम्मेलन, चौ0 तेजपाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसम[ें] मृगेन्द्र शास्त्री, ब्र0 हृदयांश सिद्धार्थ प्रशान्त आर्य, भजनोपदेशक राजबीर सविता आदि वक्ताओं ने श्रोताओं क[ो] प्रभावित किया।

महोत्सव के अयोजन में मुख[्य] भूमिका एवं सहयोग संस्था के प्रधा[न] विजय कुमार ठेकेदार, संस्थाप[क] स्वामी आनन्दवेश, आचार्य इन्द्रपाल मुख्याधिष्ठाता, प्रेमशंकर मि[श्र] (प्रधानाचार्य), व्यवस्था के रूप [में] सामेवीर सिंह, घनश्याम श[र्मा] (प्रवक्ता), राणा सिंह (प्रवक्ता) विकास शास्त्री, अरुण कुम[ार] (प्राध्यापक), श्रद्धानन्द दानी विशे[ष] सहयोगी रहे।

मकर संक्रान्ति जनवरी में नहीं होती : आचार्य दार्शनेय

सुमनकुमार वैदिक
ग्रेटर नोएडा।

वैदिक पंचांग के संपादक ज्योतिषाचार्य आचार्य दार्शनेय लोकेश के यहां 21 कुण्डीय यज्ञ 22 दिसम्बर को मकर संक्रान्ति पर कराया गया। यज्ञ की ब्रह्मा वेदविदुषी डॉ0 कल्पना अचार्या रहीं। आर्य समाज मुल्तान नगर के प्रधान राजकुमार आर्य मुख्य वक्ता रहे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 22 दिसम्बर से सूर्य उत्तराण में हो जाता है, जिससे दिन बड़ा होने लगता है। वास्तव में यही मकर संक्रान्ति का दिन है। किंतु हम लोग गलत निर्णय पंचांगों के कारण 14 जनवरी को मनाते हैं। संक्रान्ति का अर्थ होता है परिवर्तन। वर्ष में 12 सौर माह होते हैं। एक महीने के समाप्त होने और दूसरे के प्रारम्भ होने की तिथि के बीच की स्थिति संक्रांति कहलाती है, जो 12 राशियों के नाम से जानी जाती है। मकर संक्रान्ति से जहां दिन बड़ा होने लगता है, वहीं कर्क संक्रान्ति से दिन छोटा होने लगता है, जिसे दक्षिणायन कहते हैं। ये घटना 22 दिसम्बर और 22 जून को घटित होती हैं। 14 जनव[री] और 14 जुलाई को नहीं। सुमन कु[मार] वैदिक ने कहा कि उत्तरायण [और] दक्षिणायन मानव के जीवन में भी घटित [होते] हैं जब मानव ज्ञान से परिपूर्ण होता है, [वह] उत्तरायण और जब अज्ञान हम[ें] आच्छादित रहता है, वह हमारा दक्षिणा[यन] काल कहलाता है। आचार्य दार्शनेय लो[केश] ने कहा कि मकर संक्रान्ति जनवरी [में] कभी हो ही नहीं सकती। इस अवसर [पर] आर्य समाज ग्रेटर नोएडा के प्र[धान] धर्मवीर एवं गौतमबुद्ध नगर के व[...] भाटी ने भी अपने विचार रखे।

मनाया वार्षिकोत्सव

औरंगनगर, मेरठ (रवीन्द्र आर्य)। आर्य समाज औरंगनगर राड़धना (मेरठ) का वार्षिकोत्सव 20 से 22 अक्टूबर तक स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में मनाया गया।

कार्यक्रम में स्वामी राजेन्द्र देव व वीरेन्द्र शास्त्री (सहारनपुर) के सारगर्भित प्रवचन हुए। कुलदीप विद्यार्थी व विदुषी आर्या निकिता के भजनों ने सम्मेलन के वातावरण को राष्ट्रप्रेम व ईश्वरप्रेम से ओतप्रोत कर दिया। रामपाल, प्रधान आ0उ0प्र0नि0 सभा बागपत, सतेन्द्र, प्रधान मु0नगर, व विद्यासागर प्रधान मेरठ ने भी सभा को संबोधित किया। सभा का संचालन सुरेन्द्र पाल व अरविन्द ने किया। सम्पूर्ण व्यवस्था की देखभाल राजसिंह आर्य प्रधान, रवीन्द्र पाल आर्य मंत्री, धीरज आर्य कोषाध्यक्ष, सतवीर आर्य उपप्रधान तथा प्रमोद राजा ने की। अभिषेक 'विद्यार्थी' का भी सहयोग रहा।

आर्य समाज राड़धना का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज औरंगनगर राड़धना (मेरठ) का निर्वाचन इस प्रकार हुआ-
प्रधान- राजसिंह
मंत्री- रवीन्द्रपाल आर्य
कोषाध्यक्ष- धीरज सिंह
पुस्तकाध्यक्ष- सुरेन्द्रपाल (प्रर्व मंत्री)

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है [कि] उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रह[ती] है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वा[र्षिक] सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी [तक] अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआ[र्डर] द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ता[कि] उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त के[सरी]

अवश्य पढ़ें - आज ही मंग[ायें]

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा
प्रकाशित संग्रहणीय पुस्तक
दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह
इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
इन पांच पुस्तकों का संग्रह है-

- पंचमहायज्ञविधि
- आर्योद्देश्यरत्नमाला
- गोकरुणानिधि
- व्यवहारभानु
- आर्याभिविनयः

पृष्ठ : 212, मूल्य : 60/- रु[पये]

पुस्तकें वी0पी0पी0, रजिस्टर्ड डाक, रेलवे तथा ट्रांसपोर्ट से [भेजी] जा सकती हैं। अधिक मंगाने पर विशेष छूट उपलब्ध है।
पता- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-24[...]
(उ.प्र.) सम्पर्क सूत्र : 09412139333

कर्मवीर स्वामी केशवानन्द

महात्मा आर्यमुनि वानप्रस्थ

जो व्यक्ति एक दिन भी किसी पाठशाला में पढ़ने नहीं गया, जिसके पास कोई धन नहीं या मानव शक्ति नहीं, उसने राजस्थान के बीकानेर डिवीजन में 287 स्कूल खोले, 7842 पुस्तकें, पुस्तकालयों के लिए एकत्रित कीं। यह व्यक्ति केशवानन्द के नाम से जाने जाते थे। इनका जन्म दिसम्बर 1883 में राजस्थान के सीकर जनपद के मगलूना ग्राम में हुआ था। यह ग्राम आर्थिक दृष्टि से कमजोर व शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ था। स्वामी केशवानन्द का बचपन का नाम 'बिरमा' था। इनके पिता ठाकरसी बड़े ईमानदार थे। वे रतनगढ़ से दिल्ली तक यात्रियों को ऊंट पर बैठाकर ले जाते थे। एक बार किसी यात्री की नौली (रुपये रखने का पेटीनुमा बटुआ) उनके ऊंट पर छूट गया। ठाकरसी ने उसे संभालकर रख लिया और जब उसका मालिक आया, तो उसे सौंप दिया।

1886 में जब बिरमा केवल ढाई वर्ष के थे, उनके पिता जी की मृत्यु हो गयी। 1889 में इनकी माता जी का देहान्त हो गया। इस प्रकार छः वर्ष की आयु में बिरमा अनाथ हो गया। बिरमा का जीवन बड़े कष्टों से गुजर रहा था। वह प्रायः भूखे पेट सो जाता। 10 वर्ष की आयु तक वह प्रायः नंगा ही रहता था। बाद में उसे कहीं से एक लंगोटी मिल गयी। बिरमा की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर थी कि उसके पास एक पैसा भी नहीं था।

1900 में वे आर्य अनाथालय फिरोजपुर में पहुंचे। वहां 1903 तक रहे। वर्ष 1904 में वे साधु आश्रम फाजिल्का के महन्त सन्त खुशहालदास के चेले बन गये और 'बिरमा' के स्थान पर 'केशवानन्द' बन गये। ये उदासी संप्रदाय के साधु थे। यद्यपि इन्होंने किसी भी विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, परन्तु 1908 में 25 वर्ष की आयु होने पर इन्होंने अध्यवसाय के द्वारा हिन्दी, पंजाबी एवं संस्कृत में दक्षता प्राप्त कर ली थी। उन्हें दो पुस्तकों ने अत्यंत प्रभावित किया- एक गुरुग्रन्थ साहब, और दूसरी लोकमान्य तिलक की 'गीता रहस्य'। स्वामी जी आर्य समाज व ऋषि दयानन्द से बहुत प्रभावित थें। उन्होंने लिखा- ''मैं आर्य समाजी वातावरण में पला हूं। ऋषि दयानन्द मेरे आदर्श थे।''

पं0 मदन मोहन मालवीय के बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना से प्रभावित होकर स्वामी जी ने संगारिया गांव में 'ग्रामोत्थान विद्यापीठ' की स्थापना की। स्वामी जी मदन मोहन मालवीय, लोकमान्य तिलक एवं गांधी जी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने देशवासियों की दुखावस्था को अपनी आंखों से देखा। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अधिकतर देशप्रेमी सज्जनों को लगा कि अंग्रेजी राज का अन्त अवश्य ही होना चाहिए, तभी देश की दशा सुधरेगी। 1907 में लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को देशनिकाले की सजा देकर मांडले भेज दिया गया। इसी बीच में सरकार ने रौलेट बिल पास कर दिया। इसके फलस्वरूप 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ। नवम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये। कांग्रेस ने उनका बहिष्कार किया। स्वामी जी फिरोजपुर के अग्रणी कांग्रेसी थे, फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर, दो वर्ष के सश्रम कारावास का दण्ड मिला। सन् 1928 में भारत में साइमन कमीशन आया। उसका जगह-जगह पर विरोध हुआ। लाहौर में 30 नवम्बर 1928 को लाला लाजपतराय पर पुलिस ने लाठी-प्रहार किया, फलस्वरूप उनकी मृत्यु हो गयी। स्वामी केशवानन्द से उनकी मृत्यु से कुछ दिनों पहले उनके एक हितैषी ने कहा कि आप पेंशन और ताम्रपत्र के लिए प्रार्थना-पत्र दे दें। तब स्वामी जी ने कहा- ''भले आदमी हमने इन फालतू बातों के लिए आन्दोलन नहीं किया था। हमने आजादी चाही, और वह मिल गयी।''

स्वामी जी ने मरुस्थल में 287 स्कूल खोले, यही एक बहुत बड़ा कार्य है। जो 'बिरमा' एक दिन भी स्कूल नहीं जा पाया था, वही स्वामी केशवानन्द बन कर शिक्षा के प्रसार में लग गया था। डॉ0 बलराम जाखड़ ने लिखा है कि उन्होंने अपने गांव पंचकोसी (अबोहर) से प्राइमरी परीक्षा पास की। मैं अपने माता-पिता की अकेली संतान था। अतः मेरी आगे कहीं पढ़ने जाने की कोई संभावना नहीं थी। सन् 1937 में एक दिन स्वामी जी हमारे गांव में आये और मेरे पिता चौ0 राजाराम जाखड़ को मुझे जाट स्कूल सांगरिया भेजने के लिए मना लिया।

स्वामी जी 12 वर्ष (3 अप्रैल 1952 से 2 अप्रैल 1964 तक) राज्यसभा के सदस्य भी रहे। स्वामी जी एक फकीर थे, परन्तु उन्होंने शिक्षा के माध्यम से अन्यों को अमीर बना दिया। स्वामी जी गरीब पैदा हुए, गरीब रहे, गरीब ही मरे। परन्तु उन्होंने हम सब के लिए महान पैतृकता छोड़ी। स्वामी जी की मृत्यु 3 सितम्बर 1972 को हुई। उनके पास कोई भी निजी संपत्ति नहीं थी। *फिर भी उन्होंने जो कार्य* किये, वे बड़े से बड़ा साधन-संपन्न व्यक्ति भी नहीं कर पाता।

आइए, प्रयाग (प्र+याग) की हवन भूमि पर यज्ञ करें

यह सर्वविदित है कि प्रयाग का कुम्भ व माघ मेला प्रसिद्ध है, और इस मेले में वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं के साधु-संत अपने-अपने दार्शनिक विचारों/ मतों के प्रचार के लिए माहपर्यन्त आते हैं। इस वर्ष कुम्भ मेला दिनांक 15.01.2019 से 19.02.2019 तक चलेगा।

महर्षि दयानन्द जी ने हरिद्वार के कुम्भ मेले में स्वयं देखा था कि किस *प्रकार से भोली-भाली जनता को धर्म* के नाम पर ठगा जाता है। धर्म के नाम पर ठगविद्या को देखकर इस प्रकार के मेलों से महर्षि दयानन्द जी के मन में घृणा उत्पन्न हो गयी थी। और इसी कारण आर्य समाज इन मेलों को पाखण्ड मानते हुए सामान्य तौर पर दूर रहता है। हालांकि महर्षि जी के कालखण्ड की विडम्बनाओं के स्वरूप में वर्तमान समय में काफी परिवर्तन हो गया है, और ठगविद्या पर भी लगाम लगी है। जनमानस में जागरूकता तो बढ़ी है, किंतु आध्यात्मिक भूख के कारण 'किम् कर्तव्य मूर्खता' रूपी विडम्बना भी बनी हुई है। इसका सबसे बड़ा कारण वैदिक धर्म की विभिन्न शाखाओं की विरोधाभाषी विचारधाराओं का बना रहना है।

पिछले कई दशकों से हम आर्य समाजी भी समुचित तरीके से आम जनमानस को वैदिक धर्म के मूल तत्वों से अवगत कराने में असफल रहे हैं, और कहावत भी प्रचलित हो गयी कि दूसरों को जगाते-जगाते स्वयं सो गये आर्य समाजी।

पिछले कई दशकों से आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रयाग अपने सहयोगी आर्य समाजों के सहयोग से यथासंभव जनजागरण करती आ रही है। इस बार और भी अच्छा कार्य करने की उम्मीद है। हम सभी आर्य समाजी विद्वानों, प्रचारकों, संतों को कुम्भ मेले के सदुपयोग हेतु सादर आमंत्रित करते हैं।

दानदाताओं से भी विनम्र अनुरोध है कि सात्विक दान देकर वैदिक धर्म के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु हमें सहयोग करें। जो संस्थाएं वैदिक धर्म/ आर्य समाज से संबन्धित प्रचार पत्रों/ पुस्तिका/ ट्रैक्ट निःशुल्क वितरण करना चाहती हैं, उनका भी स्वागत है। हमारा बैंकखाता (बचत) संख्या- 24440100037154, बैंक ऑफ बड़ौदा, बांसमण्डी, प्रयागराज है, जिसका RTGSINEFT, IFSC कोड BARBOALBANS है।

निवेदक-
अजेय कुमार महरोत्रा, मंत्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, इलाहाबाद

॥ ओ३म् ॥
प्रो0 सुषमा गोगलानी
मो0 : 9582436134
प्रतिनिधि
अशोक कुमार गोगलानी
मो0 : 8587883198
HANDICRAFT
सुषमा कला केन्द्र
आकर्षक स्मृति चिन्ह तथा पारितोषिक सामग्री के लिए सम्पर्क करें।
-: मुख्य आकर्षण :-

पता : C-1/1904, चैरी काउंटी, ग्रेटर नोएडा (वैस्ट)

आचार्य संजीव रूप यज्ञ करवाते हुए– केसरी

आर्य संस्कारशाला में खिचड़ी आयोजन

आचार्य संजीव रूप
बिल्सी (बदायूं)।

तहसील क्षेत्र के ग्राम गुधनी में मकर संक्रांति के पर्व पर आर्य समाज मंदिर में आर्य संस्कारशाला गुधनी के तत्वाधान में खिचड़ी भोज का आयोजन किया गया! शाला के 100 से अधिक बच्चों को खिचड़ी भोज कराया गया! इस अवसर पर विसौली से रोटरी सुभाष चंद्र अग्रवाल व उनकी धर्मपत्नी ने भी अपने हाथों से प्रसाद बांटा इससे पूर्व सामूहिक यज्ञ किया गया। यज्ञ में राष्ट्र रक्षा व विश्व शांति के लिए आहुति दी गई। आचार्य संजीव रूप ने समझाया कि "मकर संक्रांति का पर्व उत्तरायण का पर्व है, अर्थात् नीचे से ऊपर जाने का, बुराई से भलाई की ओर जाने का यह दिन होता है। इसलिए दान से इस दिन की शुरुआत की जाती है। दान और परस्पर सद्भावना बना कर के हम अपने जीवन का उत्तरायण कर सकते हैं ! जातिवाद, छुआछूत मानव समाज के कोढ़ है, इन्हें दूर करना ही होगा ।सुभाष चंद्र अग्रवाल ने कहा बालक भगवान का रूप होते हैं यह सब प्रकार की बुराइयों से दूर रहते हैं इन्हें प्रसाद खिलाना मानो भगवान को प्रसाद खिलाना है। इस अवसर पर उझानी के सुप्रसिद्ध समाजसेवी प्रदीप गोयल व आभा गोयल भी पधारे। सभा में विनीत कुमार सिंह, मनोज श्रीवास्तव, साहब सिंह, प्रज्ञा आर्या, साक्षी रानी, यीशु आर्य, अंजलि आर्य, प्रश्रय आर्य, ईशा रानी, तानिया रानी, राकेश आर्य आदि मौजूद रहे।

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, जन्मतिथि– 12.01.1992, कद– 5 फुट 5 इंच, शिक्षा–B.Tech. (Com. Sc.) NIT, Raipur से, Multinational Company में अच्छी पोस्ट पर कार्यरत् प्रतिष्ठित परिवार के युवक हेतु आर्य परिवार की सुशिक्षित एवं संस्कारवान युवती चाहिए। सम्पर्क– 9412865775, 9412135060

वर चाहिए

वैदिक विचारों की 26 वर्षीय संस्कारित ब्राह्मण कन्या। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चोटीपुरा से। शिक्षा– बी0टैक0। हिन्दुस्तान एरोनैटिक्स, बंगलूरू में प्रबन्धक युवती हेतु आर्य समाजी परिवार का समकक्ष संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 8368508395, 9456274350

वधु चाहिए

आर्य परिवार, संस्कारित, आयु– 40 वर्ष, कद– 5 फुट 8 इंच, शिक्षा–स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क– 09457274984

वधु चाहिए

आर्य परिवार संस्कारित, यमुनानगर (हरियाणा) निवासी, जन्म 19 जुलाई 1982, कद 6 फुट, शिक्षा बी0ए0, अपना मकान व दुकान, व्यापार में संलग्न युवक हेतु आर्य समाज परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। सम्पर्क सूत्र : 07404136582, 08607200203

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए, और चुनिए एक सुयोग्य जीवन-साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.) (चलभाष : 09412139333)

टंकारा चलो : आर्यावर्त केसरी के संयोजन में

टंकारा, अहमदाबाद, द्वारिकापुरीधाम, पोरबंदर तथा सोमनाथ आदि

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा कार्यक्रम-2019

कार्यालय- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा– 26 फरवरी से 06 मार्च 2019 तक

प्रस्थान : 26 फरवरी 2019 को प्रातः 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप द्वारा। (25 फरवरी 2019 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्यसमाज मंदिर, गंज, स्टेशन रोड, मुरादाबाद)

वापसी : 06 मार्च 2019 को अमरोहा सायं 5:45 बजे आला हज़रत एक्सप्रेस से।

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

- **अहमदाबाद, आर्यवन-रोजड़-** साबरमती आश्रम, अक्षरधाम, वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुरुकुल आर्यवन आदि।
- **द्वारिकापुरीधाम-** चार धामों में से एक धाम द्वारिकाधीश मंदिर, गोमती गंगा, श्री कृष्ण महल, भेंटद्वारिका, रुक्मणी मन्दिर, गोपी तालाब, आदि।
- **नागेश्वर महादेव-** द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक नागेश्वर महादेव।
- **पोरबन्दर-** महात्मा गांधी का जन्मस्थल, आर्ष कन्या गुरुकुल, सुदामा महल, नक्षत्रशाला, भारतमाता मंदिर आदि।
- **भालका तीर्थ-** वह ऐतिहासिक स्थली, जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण को तीर लगा था।
- **सोमनाथ तीर्थ तथा दीव-** ऐतिहासिक सोमनाथ मन्दिर तथा समुद्र दर्शन एवं 'लाइट एंड साउंड शो' का दिग्दर्शन।
- **ऋषि जन्मभूमि टंकारा-** महर्षि दयानन्द की जन्मस्थली, ऐतिहासिक शिवालय, पावन नदी, गोशाला, टंकारा ट्रस्ट भवन तथा आर्यसमाज का परिभ्रमण एवं बोधोत्सव में सहभागिता।

: सहयोग राशि :

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास तथा परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था आर्यावर्त केसरी- प्रबंध समिति द्वारा होगी।

इस यात्रा निमित्त कुल धनराशि रु० 4500/- (सीनियर सिटीजन के लिए रु० 4000/-) देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 2000/- की धनराशि दिनांक- 25 जनवरी 2019 तक नकद या आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से देय डिमांड ड्राफ्ट/चैक द्वारा कार्यालय के पते पर भेजनी आवश्यक होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। इसी प्रकार जो महानुभाव AC III में यात्रा करने के इच्छुक हों, उनके लिए भी आरक्षण की सुविधा उपलब्ध है। वातानुकूलित श्रेणी के लिए कुल रु० 2000/- तक अतिरिक्त धनराशि देय होगी, जिसमें से रिजर्वेशन तथा बुकिंग आदि व्यवस्थाओं के लिए रु० 3000/- की धनराशि अग्रिम देय होगी। शेष धनराशि यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व यथासमय सुविधानुसार जमा करानी अपेक्षित है। यह धनराशि आपके द्वारा 'आर्यावर्त केसरी' के भारतीय स्टेट बैंक शाखा- अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या- 30404724002, IFSC Code SBIN0000610 में जमा करायी जा सकती है। प्रदत्त धनरशि की रसीद कार्यालय द्वारा आपको तत्काल प्रेषित की जाएगी। विलम्ब से प्राप्त धनराशि की दशा में रिजर्वेशन सुनिश्चित नहीं हो पाते, जिससे भारी असुविधा हो सकती है। इसलिए जितनी शीघ्रता हो सके, अपनी धनराशि जमा करा दें। समुचित व्यवस्था में आपका पूर्ण सहयोग प्रार्थनीय है।

-: यात्रियों को आवश्यक निर्देश :-

● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, परिचय-पत्र (आईडी प्रूफ), दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, यह भी सूचित करें।

नोट :

१. परिस्थितिवश यात्रा की तिथियों तथा परिभ्रमण-स्थलों में आंशिक परिवर्तन का अधिकार संयोजक को होगा। २. यात्रा रेलगाड़ी तथा डीलक्स बसों द्वारा संपन्न होगी। ३. आवासीय व्यवस्था ट्रस्ट अथवा तीर्थस्थलों पर उपलब्ध व्यवस्था के अन्तर्गत रहेगी। यदि कोई महानुभाव होटल में रुकना चाहते हों, तो इस सुविधा के लिए होटल का वास्तविक शुल्क अलग से देय होगा, जिसके लिए पूर्व में अवगत कराना होगा, अथवा यह व्यवस्था यथासंभव उपलब्धता पर निर्भर रहेगी। कोटिशः धन्यवाद;

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का पावन कार्यक्रम बनाएं...

-डॉ. अशोक कुमार आर्य, यात्रा संयोजक एवं संपादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कालोनी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)- 244221
(चलभाष : 09412139333, 8630822099)

❒ हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), ❒ अभय आर्य (9927047364),
नरेन्द्रकांत गर्ग- व्यवस्थापक (09837809405),
❒ सुमन कुमार वैदिक- सह व्यवस्थापक (09456274350)

वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंचासीन पदाधिकारीगण एवं श्रोतागण– केसरी

आर्य समाज ने राष्ट्र को प्रदान की नई दिशा : संदीप शर्मा

मानव मात्र के प्रति रखें प्रेम एवं सद्भाव : अग्निमित्र शास्त्री

जीवन में सुख चाहिए तो दूसरों को सुख देना सीखिए तथा माता–पिता की सेवा से ही मिलता है सच्चा सुख : आचार्य चंद्रेश

वैदिक प्रवचन एवं भजनों के साथ हुआ आर्य समाज महावीर नगर का तीन दिवसीय धार्मिक आध्यात्मिक समारोह का शुभारंभ। लघु वृत्त चित्र के द्वारा जाना महर्षि दयानंद के जीवन एवं उनके कार्यों को।

राधावल्लभ रठौर
कोटा।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने भारत को वैदिक विचार दिए, जिससे राष्ट्र को नई दिशा मिली। उक्त विचार कोटा दक्षिण के विधायक संदीप शर्मा ने आर्य समाज महावीर नगर के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर व्यक्त किए। अपने संबोधन में विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि अंधविश्वास और ढोंग को दूर करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है और आज भी आर्य समाज लोगों में जागृति कर, पाखंड एवं अंधविश्वास से बचाने का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर गांधीधाम गुजरात से पधारे वैदिक प्रवक्ता आचार्य चंद्रेश जी ने कहा कि सभी मनुष्य जीवन में सुख चाहते हैं, किंतु यदि जीवन में सुख चाहिए तो दूसरों को सुख देना प्रारंभ कीजिए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि सुख प्रेम से मिलता है और प्रेम में त्याग की भावना निहित होती है। त्याग की भावना से ही संसार में प्राणी मात्र के कल्याण का कार्य किया जा सकता है और सुख की प्राप्ति की जा सकती है। समारोह के इस अवसर पर आर्य समाज कोटा के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि माता पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को संस्कार प्रदान करें, जिससे बच्चे बड़े होकर परिवार व समाज की सेवा कर सकें।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अभिभावक अपने बच्चों पर शिक्षा के लिए अनावश्यक दबाव न बनाकर उन्हें सहजता के साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करें। आर्य समाज के पंडित वृद्धिचंद आर्य एवं डीएवी के धर्मशिक्षक शोभाराम आर्य ने भी अपने विचार प्रकट किए।

इससे पूर्व कार्यक्रम का प्रारंभ प्रातःकाल योग सत्र के साथ हुआ। योग के उपरांत आचार्य चंद्रेश जी के ब्रह्मत्व में सभी आर्य महानुभावों ने मानव कल्याण की कामना से देवयज्ञ किया एवं आहुतियां प्रदान की। कार्यक्रम में मधुबनी बिहार से पधारे आर्य भजन उपदेशक पंडित राम दयाल आर्य ने ईश्वर के गुण धर्म स्वभाव को प्रकट करने वाले मधुर भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम समारोह में एडवोकेट अभय देव शर्मा के नेतृत्व में आर्यवीर दल बूंदी के आर्यवीरों एवं वीरांगनाओं द्वारा योगासन एवं जूडो कराटे का व्यायाम–प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, वर्तमान प्रधान नरदेव आर्य सहित कोटा, बूंदी, बारां, रावतभाटा तथा आर्य समाज खेड़ारसूलपुर के आर्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान आरती आर्य ने किया तथा आर्य समाज के मंत्री राधावल्लभ राठौर ने सभी का आभार प्रकट किया।

आर्य समाज महावीर के भव्य धार्मिक आध्यात्मिक समारोह के द्वितीय दिवस वैदिक प्रवक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि हमें मानव मात्र के प्रति प्रेम एवं सद्भाव रखना चाहिए। वेद कहते हैं प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह दूसरे मनुष्यों की रक्षा करें। उनके विकास में सहयोग देवे। महावीर नगर तृतीय में गीता भवन में आयोजित कार्यक्रम में उन्होनें कहा कि हमें ऊँच नीच के आधार पर मनुष्यों में भेद नहीं करना चाहिए।

समारोह में गांधीधाम गुजरात से पधारे वैदिक प्रवचक आचार्य चंद्रेश ने कहा कि माता पिता की सेवा करना हम सब का कर्तव्य है। उनके आशीर्वाद से जो यश एवं कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है वह अतुलनीय है। उन्होंने कहा कि हमें भगवान राम और भगवान कृष्ण के आदर्शो पर चलकर उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। कार्यक्रम में डीएवी के धर्मशिक्षक पंडित शोभाराम आर्य ने कहा कि हमें यह मनुष्य जीवन परमेश्वर की उपासना के लिए मिला है, भगवान की भक्ति के लिए मिला है इसलिए हमें निष्काम भावना से कार्य करते हुए भक्ति करनी चाहिए। इस अवसर पर मधुबनी (बिहार) से पधारे भजन उपदेशक पंडित रामदयाल आर्य ने भारत की पुरातन संस्कृति को वर्णित करने वाले सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के इस अवसर पर विशेष रूप से महर्षि दयानंद के जीवन पर आधारित लघु वृत्त चित्र का प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया गया, जिसके द्वारा महर्षि दयानंद के जीवन दर्शन एवं कार्यों के बारे में लोगों ने जाना। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातःकाल योग सत्र के साथ हुआ। इसके उपरांत आर्यजनों ने देव यज्ञ में वेद मंत्रोच्चार के साथ आहुतियां दीं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक है और जीवन को मार्ग दिखलाने वाला है। उक्त विचार एलेन कोचिंग के निदेशक एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोविंद माहेश्वरी ने आर्य समाज महावीर नगर के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के समापन के अवसर पर व्यक्त किए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद दया के सागर थे, क्योंकि जो ईश्वर को याद करता है उसे ही ईश्वर की दया का आनंद मिलता है।

इस अवसर पर कोटा के वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि अभिमान व्यक्ति के विकास में बाधक का कार्य करता है। मनुष्य को संपत्ति, बल, रूप और जवानी पर गर्व नहीं करना चाहिए। समापन समारोह में वैदिक ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विजेता छात्र–छात्राओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज महावीर नगर द्वारा आर्य समाज के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए आर्य समाज के अर्जुनदेव चड्ढा, लालचंद आर्य, पी.सी. मितल, पी.डी. मल्होत्रा, ऐलेन के निदेशक गोविंद माहेश्वरी का केसरिया दुपट्टा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया एवं स्मृति चिंह भेंट कर सम्मानित किया गया।

धार्मिक समारोह के इस अवसर पर वैदिक साहित्य की स्टॉल एवं वैदिक सिद्धांतों को प्रस्तुत करने वाली चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई।

कार्यक्रम में कोटा, बूंदी, बारां, रावतभाटा, खेड़ारसूलपुर से बड़ी संख्या में आर्य समाज के सदस्यगण एवं धर्मप्रेमी महिला व पुरूष उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान आर.सी. आर्य ने किया। आभार राधावल्लभ राठौर ने व्यक्त किया। शांतिपाठ के पश्चात ऋषि लंगर महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आर्ष साहित्य बिक्री केन्द्र

समस्त प्रकार का आर्ष साहित्य- वेद, उपनिषद, दर्शन, ऋषि प्रणीत ग्रन्थ, जीवन परिचय, सम-सामयिक साहित्य सहित पूर्वजन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी का सम्पूर्ण साहित्य एवं ओ३म ध्वज, पट्टिकाएं, फोटो, कैलेण्डर तथा कैसेट आदि बिक्री हेतु उपलब्ध हैं।

व्यवस्थापक- आर्यावर्त प्रकाशन
गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१
फोन : 05922–262033 / 09412139333

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) में

बोधोत्सव का भव्य आयोजन

आर्यजनों को जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में भी महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, से मंगलवार अर्थात् 3 से 5 मार्च 2019 तक किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मंत्री

नारी पुनरुत्थान के सूत्रधार थे महर्षि दयानन्द सरस्वती

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहां नारियों का यथोचित सत्कार होता है वहां देवताओं का वास होता है। मनु के इन वचनों को व्यवहार में लाने, नारी-मुक्ति का सूत्रपात करने तथा वन्दनीया मातृशक्ति को उसका वास्तविक स्थान दिलाने में आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अद्वितीय है। यह सर्वविदित है कि अतीत में जब नारी शक्ति को शिक्षा व वैदिक कर्मकाण्ड से भी वंचित कर दिया गया था, उन्हें न तो वेद के पठन-पाठन और श्रवण का अधिकार था, और न ही समाज में उनकी कोई विशिष्ट स्थिति थी, बल्कि बालविवाह, सतीप्रथा जैसी अमानवीय कुरीतियों से वे अभिशप्त थीं, तब ऐसे समय में ऋषिवर दयानन्द ने ही नारी की वेदना को समझा और उन्हें उनके वास्तविक अधिकार दिलाने के लिए कठोर संघर्ष किया।

निश्चय ही, हमारे वैदिक दर्शन एवं सहस्राब्दियों पूर्व के परम्परागत परिदृश्य में नारी महिमा के उद्‌गीतों का गायन है। उसे पंचायतन देवपूजा में 'मातृदेवो भव' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। स्मृतिकारों ने जहां नारी सम्मान की उद्‌घोषणा की है वहीं वेद-वेदांगों व ब्राह्मणग्रन्थों में मातृशक्ति को 'सहस्रं तु पितृन माता गौर वेणाति रिच्यते' अर्थात् 'दस उपाध्यायों से एक आचार्य, एक सौ आचार्यों से एक पिता व एक सहस्र पिताओं से भी एक माता की श्रेष्ठता नियत कर' उसे सर्वोत्कृष्ट रूप में विभूषित किया है। वैदिक चिन्तन में मातृशक्ति का स्थान सर्वोपरि माना गया है। हमारे शास्त्रकारों ने कहा है कि 'स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ' अर्थात् माताएं अपने सदन की ही ब्रह्मा न होकर समस्त राष्ट्र की ब्रह्मा होती हैं। नारी शक्ति ही समस्त प्रकार के आध्यात्मिक, राजनीतिक व सामाजिक सशक्तिकरण का आधार है। यजुर्वेद के 'आ ब्रह्मन ब्राह्मणो...' मंत्र में नारी को राष्ट्र का आधार कहा गया है तथा उससे बलवान, सभ्य व सुयोग्य याज्ञिक संतान की अभिलाषा की गयी है। कालांतर में विसंगति देखिए कि वन्दनीया मातृशक्ति पाशुविक तथा अमानवीय अत्याचारों का शिकार हुई, उसे 'नारी नरक का द्वार', 'पैरों की जूती', 'विलासिता की वस्तु', 'बेजान वस्तु', आदि के रूप में भी प्रचारित किया गया है, यही नहीं, कहना न होगा कि प्राचीन युग की महान, विदुषी, शास्त्रज्ञ, राजनीति, दर्शन व प्रशासन आदि में प्रवीण यह नारी शक्ति अधःपतन की शिकार हो गयी। आज कन्याभ्रूण हत्या, बलात्कार व नग्नता जैसी कुत्सित प्रवृत्तियों ने नारी सशक्तिकरण को एक बड़ी चुनौती भी दी है, जिसके विरुद्ध जनजागृति अपेक्षित है। नारी अस्मिता, गौरव व वैभव की रक्षा के लिए आज अनेकानेक सांविधानिक प्रावधान किये गये हैं, किन्तु इनके ईमानदारी से क्रियान्वयन की अपेक्षा है। मानवाधिकार व उनके संरक्षण की व्यवस्था है, किन्तु इस दिशा में एक वातावरण विकसित करने की आवश्यकता है। यह सही है कि आज वन्दनीय मातृशक्ति देश-विदेश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक सभी द्रष्टियों से सशक्त है तथापि समाज में नारियों के प्रति जो उत्पीड़नात्मक रवैया है उसे भी कदापि नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। ऐसे में वस्तुतः आज भी नारी-जागृति, नारी-मुक्ति, व नारी-अधिकार की दिशा में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत आर्य समाज के सशक्त आन्दोलन की प्रबल आवश्यकता है। आओ हम सब इस दिशा में अपने कदम बढ़ाएं।

मधुरता की साधना

स्वामी दयानन्द विदेह

ओम् भूर्भुवः स्वः तसवितुर् वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥
भजन गाइए-
जीवन के अन्तिम क्षण तक
हे नाथ सुपथ पर मुझे चलाना।
कभी भूलकर चलूँ कुपथ पर,
खींच मुझे तुम पीछे लाना।
नश्वर धन वैभव के लिए,
कभी कुपथ पर भटक न जाऊँ।
धन वैभव पाऊँ तो भगवन्,
सदा सुपथ पर चलकर पाऊँ।
जन-धन वैभव साथ न आया,
साथ न यह मेरे जाएगा।
चलना पड़े यहां से जिस दिन,
काम न कुछ मेरे आएगा।
क्यों फिर मैं विदेह धन हेतु,
चलूं कुपथ पर पाप कमाऊँ।
'अग्ने! नय सुपथा राये' माँ,
क्यों न निरंतर पद यह गाऊँ?
सभी संकल्प लें, बोलें-
ओं सं श्रुतेन गमेमहि,
मा श्रुतेन विराधिषि।
हम सुने हुए उपदेश के अनुसार आचरण करें। हम सुने हुए उपदेश के विरुद्ध व्यवहार न करें।
ओं मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्। वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधु-संदृशः। (अ0 1-34-3)
पवित्रात्माओ!

परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से केशरी टिम्बर इण्डस्ट्रीज के माध्यम से वेद-प्रचार का यह आयोजन-सत्संग हो रहा है। अभी मैंने एक मंत्र का उच्चारण किया। यह मंत्र अथर्ववेद का है। मंत्र में मधुरता की साधना की बात कही गयी है। आप घर में हैं या बाहर हैं, देश में हैं या विदेश में हैं, आप चाहते हैं कि चित्त में शान्ति हो, जीवन में मिठास और मधुरता हो। लोग मुझसे पूछा करते हैं 'आपका विषय क्या होगा?' मैं कहता हूँ- सबका लक्ष्य एक ही है- चित्त में शान्ति बनी रहे। मस्तिष्क में पवित्रता बनी रहे। चाहे योग कहें, धर्म अथवा आध्यात्मिकता, सब जगह अशान्ति है। कवि के शब्दों में कहा है-मर्ज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की।'

तो, मंत्र में मधुरता की बात बताई गयी है। मंत्र में कहा गया है- 'मधुमन्मे नि-क्रमणम्; मेरा संपर्क-मेरी निकटता मीठी हो, अच्छी हो।

मंत्र में है, व्यक्ति की साधना (अभ्यास-व्यवहार) कैसी हो?हम सबको अपने व्यवहार को, अभ्यास को ठीक करना होगा। स्वभाव को अच्छा बनाना होगा। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र, तथा विश्वमानवता को मधुर करना होगा। सबकी जड़ व्यक्ति है। व्यक्ति ठीक नहीं, तो परिवार उत्तम नहीं। लोग चर्चा कर जाते हैं- उस व्यक्ति के अन्दर बड़ी त्रुटियां हैं, संस्थाओं में कमियां हैं, समाज में बहुत बुराइयां हैं। शायद ही कहीं कोई मिल पाए, जो गुणों की प्रशंसा करे। हमने चारों तरफ से वातावरण सड़ा करके दुषित कर रखा है। अतः मानव को मधुर बनाना होगा। चिन्तन को पवित्र करना होगा। मधुर वातावरण के लिए विचारों को शुद्ध बनाना होगा। हम जब परस्पर एक-दूसरे से मिलें, तो अभिवादन किया करें। उसका शब्द बड़ा सुन्दर भावपूर्ण है- 'नमस्ते!' सभी हृदय और मस्तिष्क के बीच हाथ रखकर बोलिए- थोड़ा सिर झुका जीजिए- नमस्ते माता जी! नमस्ते पिता जी! नमस्ते स्वामी जी! नमस्ते पंडत जी! नमस्ते नानी जी! (हँसी........)। जब भी अभिवादन करें, दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाकर करें। एक सज्जन पार्क में प्रातः भ्रमण के समय मिला करते थे। यह घटना 35 वर्ष पहले की है। जब भी मैं मिलता, नमस्ते बोलता। वे प्रत्युत्तर देते, ''मैं नमस्ते आपको नहीं बोलूंगा, आपसे गम्भीर मतभेद हैं।'' मैंने कहा- श्रीमान्! मतभेद होने पर भी नमस्ते बोला करो। काफी दिनों के बाद वह नमस्ते बोलने लगे। धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार हो गया। जहां चेतना है, वहां मतभेद होना बुरी चीज नहीं। जड़ या पत्थर में मतभेद नहीं होता। एक महाशय कहने लगे- ''मेरी पत्नी मेरे विचारों की नहीं है।'' मैंने कहा- चिन्ता मत कीजिए, पूज्य स्वामी गुरुजी (विदेह) जब मॉरीशस गये, तो वहां के एक सज्जन ने कहा- क्या आपसे मत-भेद रख सकता हूँ।'' उन्होंने कहा- अवश्य, एक नहीं अनेक। हो सकता है। बस! मन-भेद नहीं होना चाहिए। हम संन्यासी हैं, विद्वान हैं, कहीं न कहीं अल्पज्ञता के कारण कुछ अपूर्णताएं, कमियां बनी रहती हैं।

सबमें भगवान को देखो। अनुभव करो। विनम्र बने रहो।
सकलसृष्टि ब्रह्ममय जानी।
करऊँ प्रणाम जोरि जुग पाणी॥
ईशावास्यमिदं सर्वम्- यजुर्वेद में कहा गया है। हमें भाव को देखना है। भाषा के अन्तर से कट्टरतावश मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं। अपनी पुत्रवधू में, सास में, सबमें भगवान को देखो। माता-पिता में भी यही भाव रखो। अपनी बेटी के लिए सुख-सुविधा का ध्यान रखते हो, उसी तरह अपनी पुत्रवधुओं के लिए भाव रखो। ईश्वर की सर्वव्यापकता में यदि विश्वास है, तो भेदभाषा समाप्त होनी चाहिए। स्नेह-प्यार परिवार में बढ़ना चाहिए। आर्यसमाज फैल गया होता, जन-जन में, परन्तु स्नेह-सौहार्द के अभाव में सिमटता जा रहा है। दूसरे क्या कर रहे हैं, इस पर ज्यादा सोचने की आवश्यकता नहीं है। आप क्या कर रहे हैं?अपने कर्म-आचरण पर ध्यान दीजिए। दूसरों पर जितना दोष-दर्शन में समय लगाएंगे, उतने ही दोष बढ़ेंगे। स्वभाव मनुष्य का निम्नता (नीचे की ओर) का है। स्वयं साधक बनकर साधक तैयार करें। अपने अन्दर जो मधु-आनन्द है, उसे फैला दीजिए। आजादी के इतने वर्ष हो गये। युवक-युवतियों पर देशभक्ति का रंग नहीं चढ़ा, क्योंकि नेताओं ने जाति-संप्रदायवाद का विष घोला। देश में कटुता के बढ़ावा दिया गया। इतने वर्षों में राष्ट्र को समस्याएं ही समस्याएं दी गयीं। समाधान कुछ नहीं। भाषाविद् शिक्षाविद् बन गये, पर भारतीय संस्कृति से दूर हो गये। सत्य सबका ले लो, ऋषि ने आर्यसमाज का नियम बनाया, बोलिए- सत्य के ग्रहण करने में और असत्य को छोड़ने मे सबको उद्यत रहना चाहिए। मधुरता के लिए आवश्यक है, अपने चिन्तन को मधुर बनाइए। सब सीधे बैठो। घुटने ऊपर करके मत बैठो। जिनका शरीर पक चुका है, हड्डी पक चुकी हैं, उनसे तो आग्रह नहीं करूंगा। आसन बदलते रहिए। गर्दन-कमर सीधी हो।

हमारे चिन्तन पवित्र हों। यह आवश्यक नहीं कि जो बहुत बढ़िया बोल रहा हो, वह उतना पवित्र ही हो। बोलने की कला का गुण ले लीजिए। पवित्रता जीवन में न होने से जीवन कटु हो जाता है। टी0वी0, रेडियो आप देख-सुन रहे हैं, और बच्चों को मना कर रहे हैं। यदि दृश्य या गानों में अपवित्रता है, तो आप भी मत देखिए। चिन्तन सही हो। 1980 में लन्दन की यात्रा हुई, दो माह वहां वेद-प्रचार करता रहा। वहां ब्वाय फ्रैंड और गर्ल फ्रैंड बस यही रिश्ता है। अगर भारत में यह स्थिति आई, संस्कृति नष्ट हो जाएगी। बड़े-बड़े शहरों में लोग चर्चा करने लगे हैं कि भाई-बहिन का रिश्ता पवित्र नहीं रहा। व्यवहार पवित्र नहीं है तो मस्तिष्क की अपवित्रता ही कही जाएगी। मस्तिष्क के चिन्तन में दो साधन हैं, आंख और कान। जैसा हम देखते हैं और सुनते हैं, वैसा ही हमारा चिन्तन होता है। मानते हैं और फिर आचरण करते हैं। मेरे ऊपर माँ का अधिक संस्कार है पूर्वजन्म का फल है। कुछ वर्तमान पुरुषार्थ का भी है। अनपढ़ माँ, पर सात्विक संस्कार थे उनके। एम0ए0 पीएच0डी0 वाले में वह संस्कार आज नहीं मिल पाता है। चित्र का प्रभाव युवा मन पर तुरन्त पड़ता है। अतः अच्छी पिक्चर देखो, अच्छा संगीत सुनो। अच्छा साहित्य पढ़ो, धीरे-धीरे मन लगेगा। आर्यसमाज के संरक्षक तथा भूतपूर्व प्रधान अम्बाला शहर में थे। सदा हँसमुख स्वाध्यायशील वृत्ति वाले थे। वातावरण चारों तरफ से सुन्दर बना लो। देखो माता की नजर से, बहन की दृष्टि से, पिता की दृष्टि से, भाई की दृष्टि से। पुत्र की दृष्टि से देखना सीखें। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन को अवश्य पढ़ें। उन्होंने अपने जीवन को मीठा बना लिया और सबको दिव्य संदेश दिया। आपका मन, आपके हाथ आपके पास हैं। आप जैसे चाहें चला सकते हैं। मधुर कान, मधुर दृष्टि, मधुर कर (हाथ) मधुर हृदय (आत्मा), सब प्राणियों में आत्मरूप देखना। अ मह: पुनातु हृदये- हृदय में महान प्रभु बैठा है।

यह मत सोचो- हम आर्यसमाजी ही अच्छे हैं, क्योंकि मे पास वेद हैं, शास्त्र हैं। भाई! आचरण-व्यवहार अच्छा होना आवश्यक है। यदि मान होता है, और मैं अहंकार में फूलकर सोचने लगूं कि सब मुझसे छोटे हैं, तो उचित नहीं। हृदय उदार हो। हृदय में परमात्मा का वास है। हाथ मधुर हो, अर्थात हाथ से सेवा करें। अलीगढ़ की घटना है, आर्यसमाज में एक संन्यासी वेद-प्रचार के लिए गये थे। दशहरे के मौके पर समाज में बहुत कम लोग आते थे। संन्यासी ने सबको कहा कि आज रात्रि जब रामलीला है, सबको पानी पिलाओ और सूचना दे दो कि एक संन्यासी आया हुआ है। वे वेद-कथा करते हैं, सभी कथा में पधारिए। कथा में बहुत लोग आने लगे। आर्यसमाजियों की प्रशंसा होने लगी। देखो! थोड़ी सी सेवा का कितना कमाल। यदि हम ऐंठे पड़े रहेंगे, तो काम चलेगा नहीं। सेवा हाथों से करनी होगी। मिशनरी बनना होगा। दोनों हाथों से अभिवादन करो। सेवा भी करो। कहीं उन्नति कहीं अवनति होती रहती है, घृणा मत करो। साधक को सेवा के द्वारा मधु बांटना चाहिए। शेष चर्चा कल करूंगा। जब सभी मिलकर शांति मंत्र का भावार्थ बोलेंगे। नेत्र बन्द कर लीजिए-

शांति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। टेक।
जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में, अग्नि पवन में।
औषधि वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व में जड़ चेतन में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में॥
ब्राह्मण के उपदेश वचन में, क्षत्रिय के द्वारा हो रण में।
वैश्यजनों के होवे धन में, और शूद्र के आचरणन में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में॥
शांति राष्ट्र निर्माण सर्जन में, नगर ग्राम में और भवन में।
जीव मात्र के तन और मन में, और जगती के हो कण कण में।
शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में॥

(वेद प्रवचन से साभार

हीरक जयन्ती के अवसर पर श्री चड्ढा के सम्मान का दृश्य आर्य नेता विनय आर्य व देवेन्द्र पाल वर्मा के साथ उपस्थित अन्य समाजसेवी तथा परिजन- केसरी

आर्यनेता अर्जुनदेव चड्ढा का हीरक जयन्ती महोत्सव सम्पन्न

एक विलक्षण व्यक्तित्व

श्री अर्जुनदेव चड्ढा का जन्म पाकिस्तान के तराव तहसील- तलादंग, जिला- कैमलपुर में 17 जुलाई 1944 को हुआ। आपकी माता का नाम राज कौशल्या तथा पिता रामलाल जी थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पाकिस्तान में व पाकिस्तान से आने के बाद हाथरस (उ.प्र.) में हुई। 8 अगस्त 1957 में सातवीं पास करने के बाद आप कोटा आए। कोटा में हायर सैकेन्ड्री पास की। आपके पिता सिंचाई विभाग में कार्य करते थे। आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए आप कक्षा- 8, 9, 10 में पढ़ते हुए ग्रीष्मावकाश में काम किया करते थे। प्रारम्भ से ही आत्मनिर्भर होने की कोशिश रही। विभाजन का दंश झेलते परिवार को नन्हें हाथों ने मजबूती प्रदान करने की। नन्हीं-नन्हीं कोशिशें की। इन्हीं झंझावातों ने एक फौलादी इंसान को गढ़ा। बचपन में अपने पिता से मिले आर्य संस्कारों में इस मातृभूमि के सपूत का पोषण-पल्लवन हुआ। परिणामत: आर्यसमाज की रीतियां, नीतियां इनकी रग-रग में रच-बस गयीं। सोते-जागते, उठते-बैठते केवल और केवल आर्य समाज, और आर्य समाज की धुन।

श्री चड्ढा कोटा के ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनके रोम-रोम में समाजसेवा की भावना भरी हुई है। हर पल विकलांगों, दीन-दु:खियों, असहायों, बेसहारों, पीड़ित कुष्ठ रोगियों, अनाथों, फुटपाथों पर सोने वालों, कच्ची बस्तियों के लोगों, कैदियों, जरूरतमंद विद्यार्थियों, वृद्धों, उपेक्षित समुदायों, शहर-गांव के इलाकों में सेवार्थ दौड़ते रहते हैं। सबकी खोज-खबर लेते रहते हैं। इनका घर सेवा सामग्री से भरा रहता है। आर्य समाज, पंजाबी समाज एवं अन्य संगठनों की कड़ी बनकर इस सेवाकार्य को सभी ऋतुओं में गति प्रदान करते हैं। वृक्षारोपण, पक्षियों की प्यास, एड्स जनचेतना, पोलियो की खुराक, आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाना जैसे विविध कार्यों से प्रभावित होकर आपको देश की जानी-मानी हस्तियों, संस्थाओं, नागरिकों, नेताओं, प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विविध उपाधियों से अलंकृत एवं सम्मानित किया है। आपके निवास स्थान पर प्रमाण पत्रों, प्रशंसा पत्रों का अम्बार लगा हुआ है।

आप स्वयं तो नेत्रदान की घोषणा कर ही चुके हैं लेकिन इससे पहले 1987 में अपने पिता, 1997 में अपनी पत्नी तथा कुछ समय पूर्व अपने बड़े भ्राता का मरणोपरान्त नेत्रदान कर सूनी आँखों की रोशनी की अलख जगा चुके हैं। श्री चड्ढा ने स्वयं 44 बार तथा दोनों पुत्रों ने क्रमश: 22 और 38 बार रक्तदान किया है। भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय किये गये कार्यों ने श्री चड्ढा को मानवता का सच्चा हमदर्द सिद्ध किया है।

रावतभाटा (कोटा) में 'क्वालिटी कंट्रोल' विभाग में दैनिक भोगी के रूप में आजीविका की शुरुआत करने वाले चड्ढा जी डी0सी0एम0 मिल में कार्य करने के साथ-साथ ट्रेड यूनियन के नेता बने। यही नहीं, अपनी नेतृत्वशक्ति का लोहा मनवाकर 'श्रीराम कैमिकल श्रमिक संघ' के संस्थापक अध्यक्ष का पद भी संभाला। औद्योगिक एवं शैक्षणिक नगरी कोटा में शायद ही कोई ऐसा गली-कूंचा होगा, जहां आपके कदम न पड़े हों। आपके घर से लेकर गाड़ी में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की सामग्री भरी रहती है। शहर के किसी भी कोने में आप बच्चों को गायत्री मंत्र याद कराते हुए यज्ञ कराते हुए या पक्षियों के परिण्डे बांधते-बंधवाते हुए दिखाई देते हैं। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन की एक-एक सांस महर्षि दयानन्द को समर्पित कर दी है। तभी तो 76 वर्ष की उम्र में भी कई बार शारीरिक आघातों को झेलते हुए कैंसर जैसी भयावह बीमारी को चकमा देकर आर्य समाज की सेवा का दीप जलाए हुए हैं। मानो परमात्मा भी आपके इस सारस्वत कर्म के लिए निरंतर इस महामानव की जीवटता को बनाए हुए है। आर्य समाज का यह सिपाही और ऋषि का दीवाना, मानव मात्र की पीड़ा को हरने वाला शिवत्व व्यक्तित्व 'जीवेम शरद: शतम्' की यात्रा कर अनन्त कीर्तिमान बनाकर आर्यत्व की ध्वजा का परचम लहराता रहेगा- ऐसा हमारा विश्वास है।

-साहित्य सम्पादक : डॉ. बीना रुस्तगी

चड्ढा जी ने किए 75 वसंत पूर्ण, बधाई देने वालों का लगा तांता

- एक व्यक्ति होकर संस्थान बन चुके हैं श्री चड्ढा जी : डॉ. अशोक चौहान
- देश के अनेक प्रसिद्ध संस्थानों के प्रमुखों की रही कार्यक्रम में उपस्थिति

कोटा। आर्यसमाज कोटा जिला के पूर्व प्रधान एवं आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक तथा आर्यनेता अर्जुनदेव चड्ढा के जीवन के 75 वसंत पूर्ण होने के उपलक्ष्य में परिजनों व विभिन्न प्रदेशों से पधारे आर्य नेताओं और विद्वानों की उपस्थिति में आर्य समाज विज्ञान नगर में आयोजित दिव्य अमृत महोत्सव धूमधाम से आयोजित किया गया। इस अवसर पर आयुष्मान यज्ञ में उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अन्तर्राष्ट्रीय वेद विद्वान डॉ. विनय वेदालंकार के ब्रह्मत्व में तथा आचार्य शोभाराम आर्य एवं पंडित श्योराज वशिष्ठ के सान्निध्य में भारी संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस दौरान लोगों ने अर्जुनदेव चड्ढा को साफा और माला पहनाकर अभिनन्दन किया। वहीं मोतियों की माला से स्वागत करने वालों का तांता लगा रहा। बड़ी संख्या में लोगों ने पहुंचकर चड्ढा को बधाई दी तथा जो लोग नहीं पहुंच पाए उन्होंने भी पत्र प्रेषित कर बधाई संदेश भिजवाया।

यज्ञ के उपरांत कार्यक्रम स्थल पर शुभकामनाएं देने और आशीष प्रदान करने वालों का निरंतर चार घण्टे तक तांता लगा रहा। हर व्यक्ति श्री चड्ढा को भेंट प्रदान करने व शुभकामना देने के लिए उत्साह प्रकट कर रहा था। इस विलक्षण व्यक्तित्व की महिमा का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आर्यसमाज की विभिन्न संस्थाओं के साथ नगर भर की दर्जनों संस्थाओं ने सम्मान पत्र, प्रतीक चिन्ह व शॉल ओढ़ाकर अपने ढंग से हर दिल अजीज आर्य नेता व समाजसेवी चड्ढा के प्रति अपने आत्मीय भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर तथा उनका नेतृत्व करते हुए अपने जीवन को वेदानुरूप याज्ञिक रूप में चैरेवेती का संदेश देते हुए जनसामान्य को प्रेरित कर रहे हैं। श्री अर्जुनदेव चड्ढा को भेजे गए संयुक्त संदेश में डीसीएम श्रीराम लिमीटेड के सीएमडी अजय एस श्रीराम, वी सीएमडी विक्रम एस श्रीराम, जेएमडी अजीत एस श्रीराम ने कहा कि हम आपके अच्छे स्वास्थ्य, शांति और खुशियों से भरे जीवन की कामना करते हैं। एमडीएच मसाला उद्योग के प्रबंध निदेशक, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर, श्री महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास अजमेर और महर्षि दयानन्द गौसंवर्धन केन्द्र

शेष पृष्ठ- १० पर तथा
चित्रमय झांकियाँ पृष्ठ- ८-९ पर

झलकियाँ

- निरन्तर चार घंटों तक चलता रहा बधाई संदेश देने वालों का तांता।
- कार्यक्रम में एक साथ उपस्थित रहीं हाजी शम्मी भाई की तीन पीढ़ियां।
- आर्यसमाज के अतिरिक्त नगर की दर्जनों अन्य संस्थाओं ने दी बधाई।
- किन्हीं कारणों से न पहुंचने वालों ने भी भिजवाये बधाई संदेश।
- मसाला कारोबार के बेताज बादशाह महाशय धर्मपाल ने भी 96 वर्ष की अवस्था के कारण उपस्थित न हो पाने का भिजवाया श्री चड्ढा को आशीष संदेश।

हीरक जयन्ती के अवसर पर श्री चड्ढा यज्ञ में आहुति देते हुए- केसरी

आर्यनेता अर्जुनदेव चड्ढा जी के हीर

देशभर से जुटीं आर्यजगत, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक

जयन्ती की चित्रमय झाँकियाँ

सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़ी अनेक विभूतियाँ

हीरक जयन्ती के अवसर पर श्री चड्ढा जी का सम्मान करते हुए राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़े संभ्रांतजन, उपस्थित परिजन व शुभचिन्तक- केसरी

आर्यनेता अर्जुनदेव चड्ढा का हीरक जयन्ती... पृष्ठ-7 का शेष.....

गाजीपुर के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल के द्वारा भेजे गए संदेश में कहा गया कि मैं स्वयं कोटा पधारने का इच्छुक था, लेकिन 96 वर्ष की आयु होने के कारण तथा वायुयान की अपेक्षित व्यवस्था नहीं होने के कारण इस कार्यक्रम में नहीं पहुंच पाने का दुख है। मैं आपके जीवन की सफलता के लिए परमपिता परमात्मा से हार्दिक कामना करता हूं। आपको आपना आशीर्वाद प्रदान करता हूं।

अमृत महोत्सव के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र आर्य ने संदेश में कहा आपके कर्मशील एवं पुरूषार्थी जीवन के 75 वसंत पूर्ण होने पर सम्पूर्ण आर्य जगत की ओर से आपको बहुत बहुत अभिनन्दन और असंख्य बधाइयां। इस अवसर पर उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान देवेन्द्रपाल वर्मा ने कहा कि अर्जुनदेव जी ने अपनी उदारता, निश्छलता, कर्मठता, अनुशासन प्रियता व समाजसेवा से परमार्थ, परोपकार तथा आर्यत्व का मार्ग प्रशस्त किया है, जो एक व्यक्ति नहीं अपितु एक संस्था हैं। आर्य वीरांगना दल दिल्ली की विभा आर्या ने कहा कि चड्ढा जी की सुबह आर्य समाज के मिशन से शुरू होती है और स्वप्न में भी इनकी परिकल्पना में आर्य समाज ही रहता है। आर्यावर्त केसरी की साहित्य सम्पादक बीना रुस्तगी ने कहा कि *"त्याग, तपस्या की प्रतिमा तुम सत्य* ज्ञान के सागर, मानवता भी धन्य हो गई तुम सा मानव पाकर"।

कार्यक्रम में डीएवी कॉलेज प्रबंधकृत समिति दिल्ली के सहमंत्री सत्यपाल आर्य ने कहा कि आपका जीवन संघर्षमय रहा, लेकिन हर संघर्ष ने आपको एक नई ऊर्जा दी। इसलिए आप समाज के उपेक्षित, निराश्रित एवं गरीब असहायों की सेवा में रात दिन लगे रहते हैं। आपका व्यक्तित्व अनुकरणीय है। डीएवी स्कूल कोटा की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि कोटा में आर्य समाज के कार्यों में श्री अर्जुनदेव चड्ढा का कार्य सदैव मील का पत्थर रहेगा। जयपुर डीएवी स्कूल के प्राचार्य एके शर्मा ने विलक्षण व्यक्तित्व को नमन करते हुए कहा कि आपकी सेवा समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए वरदान है। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री सतीश चड्ढा ने कहा कि आपने यह साबित कर दिया है कि संकल्पित जीवन व कर्मशील जीवन के सामने आयु भी नतमस्तक हो जाती है। हाजी शम्मी भाई की तीन पीढियां कार्यक्रम में उपस्थित थीं।

डीएस सरीन ने कहा कि आपके सेवा को समर्पित 75 वर्षों की शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपके सेवाकार्य इसी प्रकार जारी रह सकें। टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी अजय सहगल ने कहा कि पलक झपकते ही आपके सेवाकार्य में लिप्त 75 वर्ष पूर्ण हो गए। आपका जीवन संघर्षमय रहा है। डीसीएम से लेकर आर्य समाज के विभिन क्षेत्रों में आपका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। विशेषतः आर्य मधुर मिलन का श्रेय केवल आपको जाता है, जिसके माध्यम से वर–वधु ढूंढना आसान हो सका। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री एसके शर्मा ने कहा कि एक अत्यंत कर्मशील, सेवापूर्ण और परोपकारी जीवन जीते हुए बिताए गए 75 वर्षों की शुभकामना प्रेषित करते हैं। गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री हंसमुख परमार ने कहा कि संकल्पित जीवन कैसा होता है, यह आपने चरितार्थ कर दिया है। अगर व्यक्ति कर्मशील रहता है तो बढ़ती आयु कुछ नहीं कर सकती है। एमिटी एजुकेशनल इन्स्टीटयूशंस के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक चैहान और निदेशक आनन्द चैहान ने कहा कि आप हर समय आर्य समाज तथा राष्ट्रसेवा में संलग्न रहते हैं। कहीं कोई सेवा कार्य हो, आप सदैव अग्रणी रहते हैं। आप एक व्यक्ति न होकर एक संस्थान बन चुके हैं।

इस कार्यक्रम में दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ओमप्रकाश ने कहा कि आप समाज के प्रत्येक वर्ग से जुड़कर कुछ कर गुजरने की भावना रखते हैं, जिसका लाभ न केवल कोटा की जनता को मिलता है, अपितु पूरे भारतवर्ष को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है। मध्यप्रदेश से पधारे आर्यसमाज इन्दौर के प्रधान डॉ. दक्षदेव गौड़ ने चड्ढा जी के संस्कारित परिवार की भूरी भूरी प्रशंसा की तथा उनके सार्थक प्रयास की सराहना की। शहर काजी ने भी शुभकामना दी। इस अवसर पर डॉ. आरसी साहनी, डॉ. केएल दिवाकर, अरविंद पाण्डेय, डॉ. जीडी पटेल, डॉ. संजय मलिक, डीसीएम के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर प्रेमदास, भाजपा शहर जिलाध्यक्ष हेमंत कृष्ण विजय, भाटिया एण्ड कंपनी के निदेशकर प्रेम जे भाटिया, राजेश बिरला, राजस्थान पत्रिका के सम्पादक राजेश त्रिपाठी, जननायक के सम्पादक प्रद्युम्न शर्मा, प्रेस क्लब के अध्यक्ष गजेन्द्र व्यास, उपाध्यक्ष प्रताप सिंह तोमर, सागर पिपलानी, आरसी आर्य, गुमानसिंह कुशवाह, रामनारायण कुशवाह, राधावल्लभ राठौर, पार्षद पवन अग्रवाल, रेखा लखेरा, पूर्व महापौर सुमन श्रृंगी, डॉ. हरीश मेहता, पतंजलि योग समिति राजस्थान के प्रभारी अरविंद पाण्डेय समेत कई लोग उपस्थित रहे। इस दौरान महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के मंत्री चन्द्रमोहन कुशवाह, रावतभाटा आर्यसमाज के प्रधान नरदेव आर्य, आर्य विद्वान शिवनारायण उपाध्याय, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ओमप्रकाश आर्य, ओमप्रकाश तापड़िया, रामप्रसाद याज्ञिक, प्रेमनाथ कौशल, चन्द्रमोहन कुशवाह, प्रभुसिंह कुशवाह, सरदार दर्शन सिंह कपूर, पार्षद विवेक राजवंशी, सीटू के महामंत्री कामरेड आरके स्वामी, पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी प्रदीप शर्मा, डॉ. परमानन्द, महिला सह राज्य प्रभारी सुशीला कुर्मी, पत्रकार सुनील माथुर, आशीष मेहता, बृजेश विजयवर्गीय, श्याम रोहिड़ा, हरिमोहन शर्मा, समाजसेवी मोहम्मद मियां, बोहरा समाज के अकबर भाई, शिक्षाविद् आरके शर्मा, गजानन्द मेहता, डॉ. संजय जायसवाल, डॉ. कुलवंत गौड़, डॉ. रवि भार्गव, डॉ. संगीता, डॉ. सीएम त्रिपाठी, पूर्व संयुक्त पुलिस अधीक्षक चन्दर सिंह, किशन रतनानी, राजेश सिंह, वाईके अग्रवाल, धर्माचार्य ज्ञानी गुरनाम सिंह, योगेन्द्र शर्मा, साबिर भाटी भी उपस्थित थे।

मिला श्रमिक गौरव का सम्मान :

आर्य नेता अर्जुनदेव चड्ढा को उनके 75वें जन्मदिन के अवसर पर श्रीराम केमिकल श्रमिक संघ की ओर से अध्यक्ष राजेश कुमार सिंह के नेतृत्व में श्रमिक गौरव के सम्मान से भी अलंकृत किया गया। वे इससे पहले ही आधा दर्जन से अधिक उपाधियों से सम्मनित हैं। चड्ढा के डीसीएम में कार्य करते हुए कारखाना श्रमिकों के हित में किए गए बेहतर कार्य के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि अर्जुनदेव चड्ढा ने श्रमिक नेता के रूप में श्रमिको और कारखाना मालिकों के बीच समन्वय बिठाने में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आकर्षण का केन्द्र बना सेल्फी प्वाइंट :

कार्यक्रम स्थल पर बनाया गया सेल्फी प्वाइंट आकर्षण का केन्द्र रहा। जिसमें महर्षि दयानन्द समेत चारों वेदों को दर्शाया गया था। अर्जुनदेव चड्ढा जी द्वारा किए गए समाजसेवा के कार्यों तथा राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न हस्तियों से मुलाकात के चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया।

डिस्पोजल का प्रयोग वर्जित था :

पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में र हुए प्लास्टिक डिस्पोजल का प्र वर्जित किया गया था, जिसको आग महानुभावों की ओर से अनुकरणीय प्रशंसनीय बताया गया।

न्यायाधिपति एस.एस. कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान का प

श्री चद्‌डा जी के सुपुत्र श्री राकेश जी के नाम
प्रिय श्री राकेश जी

सस्नेह सादर आपकी ओर से प्रेक्षित दिव्य अमृत महोत्सव के आयोज एवं गृह प्रवेश का निमन्त्रण प्राप्त हुआ, जिसके लिए आभारी हूँ। परमपि परमेश्वर की कृपा से श्री अर्जुन देव चद्‌डा जी ने अपने संघर्षमय सेवाभावी जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए हैं और 76वें बसन्त में वे प्रवेश कर है। श्री चद्‌डा साहब जैसे कृत संकल्पित व्यक्तित्व के 75 वर्ष की आयु पूर्ण क पर परिवारजन द्वारा दिव्य अमृत महोत्सव के आयोजन का शिवसंकल्प निश्चित स्तुत्य तथा प्रशंसनीय है और इसके लिए सभी परिवारगण एवं सम्बद्धजन साधुव के पात्र हैं।

दरअसल अभिनन्दन व्यक्ति का नहीं, अपितु उसकी वृत्ति एवं गुणों होता है और श्री चद्‌डा जी ने अनवरत रूप से निष्काम प्रयास कर निर्लि भाव से सामाजिक कठिनाईयों से ग्रस्त व्यक्तियों तथा वैदिक धर्म व आर्यसमा के उन्नयन के लिए कार्य किया है। श्री चद्‌डा जी ने 'स्व' की संकुचित सी से निकलकर 'पर' के लिए, वैदिक धर्म व आर्यसमाज के लिए कार्य करने संकल्प स्वेच्छा से वरण किया है। अपने कोटा पदस्थापन के समय तत्पश्चात् श्री मैंने श्री चद्‌डा जी को वैदिक ग्रन्थों तथा सत्यार्थ प्रकाश प्रचार-प्रसार, दशहरा मेले में आर्यसमाज के स्टॉल के संचालन तथा वृक्षारोप आदि कई प्रकार के श्रेष्ठ कार्यों के क्रियान्वयन से सम्बद्ध देखा। व्यक्तिगत लिप के बिना समर्पण से श्री चद्‌डा जी द्वारा सम्पादित कार्य निश्चित ही सात्वि परोपकार की श्रेणी में आते हैं जो उन्हें श्रेष्ठ तथा अभिनन्दन योग्य बनाता है। पाया कि कोटा सम्भाग से जुड़े व्यक्तियों के स्मृति के चित्राधार से आपकी छवि ए उज्ज्वल, प्रशस्त तथा सेवा क्षेत्र में अग्रणी के रूप में अंकित है।

श्री चद्‌डा जी से वार्तालाप के दौरान उनकी सहज आत्मीयता ने मु सदैव अनुप्राणित किया है। श्री चद्‌डा जी अहर्निश मनसा-वाचा-कर्मण वैदिक सिद्धान्तों व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार एवं अनेकानेक पुनीत कार्यों में पू प्रतिबद्धता एवं पुरुषार्थ के साथ संलग्न है। सहृदयता एवं विनम्रता के साथ समाज लिए तन-मन-धन अर्पित करना और अपने व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक ए धार्मिक कार्यों में लगे रहना उनके जीवन की अनूठी विशेषता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि उनका एक भरापूरा योग्य परिवार है वैदिक संस्कारों में पल्लवित व पुष्पित हैं और सभी सुसंस्कारों के साथ उन ही पथ का अनुगमन कर रहे हैं। मेरी हार्दिक इच्छा दिनांक-13.01.2019 च कोटा आकर अमृत महोत्सव में भाग लेने की थी किन्तु परिस्थितियोवश ऐ सम्भव नहीं हो पाया, इसका मुझे खेद है। श्री चद्‌डा जी जैसे समाजसेवी ए कर्मशील व्यक्तित्व को 75 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर बधाई देते हुए कोटि-कोटि शुभकामनाओं का यही संवेग भेंट करना चाहूंगा कि तन-मन-धन से धार्मिक, सामाजिक एवं अन्य लोकोपयोगी कार्य सम्पन्न कर हुए सपरिवार आनन्द तथा मंगलानुभव करते रहें। प्रफुल्लित, प्रसन्नचित ए स्वस्थ रह दीर्घायु प्राप्त करें और उनके कार्यकलापों से समाज अधिकाधि लाभान्वित होता रहे। उनके आनन्दपूर्ण भविष्य की कामना करते हु विश्वनियन्ता से प्रार्थना है कि नैरोग्ययुक्त दीर्घायुष्य प्राप्त कर श्री अर्जुन देव के आगामी समय का अधिकाधिक शुभ कार्यों में सदुपयोग होता रहे। उन कर्मशील व सेवामय व्यक्तित्व का प्रकाश चारों ओर फैले जिससे अन्य बन्धु को भी प्रेरणा मिले तथा उनका आगामी जीवन और भी सफलता के साथ से के नवीन पायदानों पर अग्रसर रहे।

सद्भावना सहित,

शुभेच्छु
(एस.एस. कोठारी

मकर संक्रांति पर्व भारतीय संस्कृति का अनूठा संगम : शास्त्री विनोद आर्य

गोण्डा। आर्य उप प्रतिनिधि सभा गोण्डा/बलरामपुर के प्रधान शास्त्री विनोद आर्य की अध्यक्षता में जिलासभा कार्यालय स्वतंत्रता सेनानी महाशय छोटेलाल होता में हर वर्ष की भांति इस वर्ष प्रातः कृष्ण कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज बड़गांव के सानिध्य में भव्य देव यज्ञ हुआ। यज्ञ के यज्ञमान सूरज कुमार रहे, मकर संक्रांति पर्व पर लाला राम सरन छोटे लाल मेमोरियल ट्रस्ट की संस्थापक एवं आर्य समाज बड़गांव की पूर्व सभासद कृष्णा देवी के 9वें स्मृति दिवस पर खिचड़ी भोज का भव्य आयोजन हुआ। इसमें संगठन के अतिरिक्त अन्य समुदायों के लोगों ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया और प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर जिला सभा प्रधान शास्त्री विनोद आर्य ने मकर संक्रांति पर्व की बधाई देते हुए इसे खगोलीये घटना बताया और कहा कि यह हिन्दुओं (आर्यों) का प्रमुख पर्व है। इस दिन सूर्य धनु राशि को छोड़कर मकर राशि में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य की किरणें संक्रांति अवस्था में होने के कारण इसका सभी जीवों, जंतुओं एवं वनस्पतियों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है, मौसम खुशनुमा हो जाता है। फसलें बेहतर होती हैं, पतझड़ आती है। इसी मौसम में ऋषि परंपरानुसार तिल और गुड़ का सेवन स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभप्रद है। शरीर स्वस्थ व सुंदर तथा ताकतवर बनाया जा सकता है। इसके प्रयोग से पाचन तंत्र मजबूत होता है और मेधा शक्ति का वर्धन होता है। सूर्य की किरणें सीधे मकर राशि में होने से नदियों का जल स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल प्रभाव डालता है, इसलिए प्रातः नदियों में स्नान कर यज्ञ अन्नदान आदि करने से जीवन सुखमय होता है।

इस आयोजन में आर्य समाज गोण्डा/बलरामपुर के विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। खिचड़ी भोज के उपरांत रस्साकशी एवं बच्चों द्वारा विविध कार्यक्रम रोचक रहा। प्रयागराज में कुंभ महोत्सव पर आर्य समाज की ओर से 14 जनवरी 2019 से 19 फरवरी तक चतुर्वेद परायण यज्ञ प्रारंभ हुआ है, जिसमें देश व विदेश के लोग भाग लेंगे और उ0प्र0 के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी द्वारा एक लाख वैदिक पत्रिका का निःशुल्क वितरण का शुभारम्भ होगा। 10 जनवरी को मुख्यमंत्री ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए 425 वर्षों से हिन्दुओं के दबे इतिहास (प्रयागराज में स्थित अक्षय वट) को हिन्दू श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया, जो अकबर ने गंगा जमुनी तहजीब को परवान चढ़ाना चाहता था, उसके लिए प्रयागराज के भी अपना किला बना लिया था जिसकी वजह से असली अक्षय वट हिन्दुओं की पहुंच से दूर हो गया था और इस वृक्ष को अनेकों बार मुगल शासक व बाद में अंग्रेजों ने अपने शासन काल में जलाने व नष्ट करने की कुचेष्टा की, परंतु इस अक्षयवट का कोई क्षय नहीं कर सका। देश की स्वतंत्रता के बाद भी हिन्दू जनता, साधु संतों ने इसे दर्शन हेतु खुलवाने के लिए बहुत प्रयास किया, परंतु पिछली सरकार ने हिन्दुओं की आस्था से खिलवाड़ करती रहीं। यह किला, जिसमें अक्षय वट है, आजादी के बाद भारतीय सेना के नियंत्रण में है, जिसे मुख्यमंत्री योगी जी ने उक्त अक्षयवट के दर्शन हेतु आम जनता के लिए दर्शन एवं इतिहास को जानने हेतु खोलकर जनमानस आस्था का संचार कर दिया।

यज्ञ करते हुए यजमान – केसरी

शास्त्री जी की स्मृति में यज्ञ : आर्य समाज बड़गांव द्वारा 11 जनवरी को लाल बहादुर शास्त्री के 52वें, स्मृति दिवस पर लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय गोण्डा में संगठन के पुरोहित शास्त्री विमल कुमार के सानिध्य में भव्य यज्ञ में जिलाधिकारी कैप्टेन प्रभांशु श्रीवास्तव एवं प्रधानाचार्य के यजमानत्व में देव मंत्रों द्वारा आहुति प्रदान कर श्रद्धांजलि दी गई। उक्त कार्यक्रम में डॉ. सीडी सिंह, स्वामी माधवराम यती, धर्मेंद्र कुमार, रमाकांत मिश्र प्रशासक आर्य समाज उतरौला, राम प्रकाश गुप्ता, डॉ. दिलीप शुक्ला, इं0 प्रज्ञा आर्या, तृप्ति आर्या, जनार्दन प्रसाद पाठक, मयंक सरन, मनोज कुमार, योगी प्रसाद, उमाकांत, डा. रमेश भारद्वाज, शास्त्री सत्य प्रकाश, सार्वदेशिक आर्य वीरदल, राज्य आर्य सभा के लोगों का सराहनीय सहयोग रहा। कृष्ण कुमार आर्य ने मकर संक्रांति पर्व पर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर बेटियां हुई सम्मानित

संजीव रूप
बिल्सी (बदायूं)।

तहसील क्षेत्र के ग्राम गुधनी में संचालित आर्य संस्कारशाला गुधनी के तत्वावधान में "राष्ट्रीय बालिका दिवस" पर शाला की 75 बेटियों ने सामूहिक यज्ञ किया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। बेटियों ने कविताएं सुनाई और स्तूप बनाए। साथ ही बेटियों ने व्यायाम प्रदर्शन भी किया। शाला के संचालक प्रसिद्ध समाज सुधारक वेद कथाकार आचार्य संजीव रूप ने सभी बेटियों को सम्मानित किया और कहा कि "बेटियां घर की रौनक होती हैं, जिस घर में बेटी नहीं होती, वह घर–घर नहीं होता। आज आवश्यकता है कि जैसे वेदों में बेटी और बेटे दोनों को ही एक समान अधिकार दिए गये हैं, हम भी बेटी को बेटों के समान अधिकार दें और हर क्षेत्र में उनके उन्नति के अवसर खोलें, यह तभी संभव होगा जब हम नारियों के प्रति अपनी सोच बदलेंगे। इस अवसर पर प्रज्ञा आर्या ने भी गीत गाते हुए कहा "बेटी बचेगी तो बचेगा मेरा देश भाई, बेटी पढ़ेगी तो पढ़ेगा मेरा देश भाई।"

इस अवसर पर कुमारी मोना, कुमारी तानिया, कुमारी ईशा, कुमारी नैंसी, कुमारी यीशु, कुमारी अंजलि ने यज्ञशाला को सजाया। यज्ञशाला के संरक्षक उझानी के प्रदीप गोयल की ओर से बेटियों को प्रसाद वितरित किया गया।

ईश्वर की उपासना से आत्मिक बल की प्राप्ति

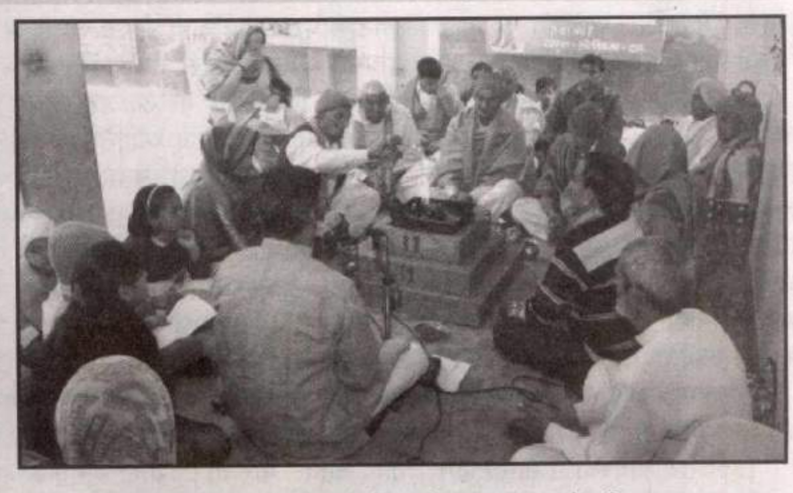

झज्जर। महर्षि दयानंद शिक्षण केंद्र झज्जर में यज्ञ भजन प्रवचन अभिनंदन समारोह में विजय आर्य (पानीपत) यज्ञ के ब्रह्मा रहे तथा मामकोर एवं महाशय रतिराम मुख्य यजमान रहे। जिला झज्जर की समस्त आर्य समाजों के प्रधान ऋषिपाल खेड़का गुज्जर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। राजकीय स्नातकोतर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ एच. एस. यादव मुख्य वक्ता रहे। इस अवसर पर डॉक्टर एच. एस. यादव ने बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, वार्तालाप, आर्थिक, धैर्य आदि बलो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मिक बल सबसे महान है। प्रत्येक बल का अपना महत्व है। आत्मिक बल निराकार ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करने से आता है। आत्मिक बल वाला मनुष्य प्रलोभन आने पर भी सत्य मार्ग से विचलित नहीं होता। प्रत्येक की उन्नति में वह अपनी उन्नति समझता है। इस अवसर पर ऋषिपाल आर्य ने बताया कि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति तीनों अलग–अलग अनादि पदार्थ हैं। तीनों को किसी ने नहीं बनाया। ये हमेशा से थे, हैं और रहेंगे। ईश्वर प्रकृति पदार्थ से जड़–जगत बनाता है। जीव और प्रकृति पदार्थों से चेतन जगत बनाता है। ईश्वर सत्य ज्ञान और जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। महाशय रतिराम ने अपनी हीरक जयंती पर 6 अक्टूबर 2019 को 251 कुंडीय हवन महोत्सव में महान लॉन्स सिलानी गेट झज्जर में निशुल्क यजमान बनने की प्रार्थना की। आर्य समाज के प्रधान द्वारका प्रसाद, सूर्यप्रकाश, सत्यदेव, उधम सिंह, पंडित जय भगवान आर्य, चमन लाल यादव, भगवान सिंह, मास्टर पनसिंह तथा अध्यापिका सुमित्रा व कांता देवी ने मधुर भजन रखें। वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय कंठस्थ याद करने वाले मनस्वी अनमोल, हर्षिता, जैसमिन, खुशी, दीप्ति आदि होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

70वें गणतंत्र दिवस विकास पर्व के रूप में मनाया गया : इं0 प्रज्ञा आर्या

गोण्डा। विद्युत परीक्षण गोण्डा की सहायक अभियंता इं0 प्रज्ञा आर्या ने कार्यालय पर 70वें गणतंत्र दिवस पर प्रातः ध्वजारोहण किया और गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए उद्बोधन में कहा कि यह राष्ट्रीय पर्व भारतीयों के लिए सम्मान का पर्व है। स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रदूत महर्षि दयानंद सरस्वती के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की प्रेरणा से ही क्रांतिकारियों को राष्ट्र के लिए कुर्बानी दी और अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के 2 वर्ष 11 माह 18वें दिन यानी 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ, जो विश्व का सबसे बड़ा संविधान का दर्जा प्राप्त है। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के यशस्वी, मुख्यमंत्री योजी द्वारा संचालित जन कल्याण योजनाएं जो इस विभाग से सम्बंधित है। हर घर को बिजली सौभाग्य योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का कार्य मुख्य अभियंता आर.के. श्रीवास्तव के कुशल नेतृत्व में शत–प्रतिशत हुआ है। इस अवसर पर अधिशासी अभियंता परीक्षण पी.के. सिंह ने बधाई दी एवं अवर अभियंता डी.के. प्रजापति, वी.के. प्रजापति के अतिरिक्त नीरज तिवारी, अरविन्द त्रिपाठी, मयंक श्रीवास्तव, सुभाश, अनिल प्रजापति, आशा वर्मा, राम प्रकाश, शिव प्रताप, टी.जी.टू के अतिरिक्त ओमप्रकाश मौर्य, आपरेटर व चपरासी उपस्थित रहे।

फलित ज्योतिष की अमान्य मान्यताओं से मानव जगत से सबसे बडा भ्रामिक वैचारिक शोषण

पं0 उम्मेद सिंह विशारद

उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे महान सामाजिक सुधारक आर्ष और अनार्ष मान्यताओं का रहस्य बताने वाले युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सम्मुलास के प्रश्नोत्तर में लिखते है।

प्र0. तो क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?

उ0. नही, जो उसमे अंक, बीज, रेखागणित विद्या है, वह सब सच्ची, जो फल की लीला है, वह सब झूठी है।

फलित ज्योतिष के द्वारा अवैदिक, व सृष्टि क्रम विज्ञान के अमान्य अनार्ष मान्यताओं को चतुर लोगो द्वारा भारत की जनता का वैचारिक शोषण करके अपना मनोरथ तो पूर्ण किया ही है, अपितु भारत वर्ष को गुलामी के दलदल में धकेलने का भी कार्य किया है। बडे अफसोस के साथ लिखना पड रहा है कि यह पाखण्ड इस वैज्ञानिक युग में भी दिनो–दिन बडता जा रहा है। स्वार्थी और चतुर किन्तु ज्ञान विज्ञान से सून्य लोग भोली–भाली जनता को फलित ज्योतिष की आड मे कई प्रकार से लूट रहे है।

इस माह का लेख फलित ज्योतिष पर लिखने का मन बना इसलिए प्रस्तुत लेख में क्लेवर क्षमता के अनुसार कई उदाहरण सहित लिखा जा रहा है। विस्तार आप स्वंय करके आगे भी प्रेषित करने की कृपा करें।

फलित ज्योतिष का पाखण्ड

कृतं मेदक्षिणेहस्ते जयोमेसव्य आहितः (अथर्व0)

ईश्वरीय व्यवस्था में मानव कर्म करने के लिये स्वतन्त्र है, और क्रमानसार फल प्राप्ति ईश्वरीय व्यवस्था मे होती है। मानव जैसा कर्म करता है वैसा ही काम उसको ईश्वर द्वारा दिया जाता है। अतः मनुष्यो को अपने दिल में भरोसा रखना चाहिए कि यदि पुरूषार्थ मेरे दायें हाथ मे है तो सफलता मेरे बायें हाथ मे है। अतः संसार मे जितने भी कार्य सिद्ध होते है वह पुरूषार्थ से होते है। मनुष्य के जीवन मे अगले क्षण क्या होने वाला है वह नही जानता है। ज्योतिषो द्वारा फलित आश्वासन भ्रामिक है यह केवल मनुष्य को गुमराह करने वाला है।

उदाहरणः भारत में मुगल सामराज्य की नीव डालने वाले लुटेरे बाबर की जीवन की एक घटना है। जब वह भारत पर आक्रमण करने आया तो भारत के प्रसिद्ध भविष्य बताने वाले ज्योतिष ने बाबर से कहा कि अभी आप भारत पर आक्रमण न करे इससे आपको सफलता नहीं मिलेगी। बाबर ने पूछा आपको यह जानकारी कैसे मिली। ज्योतिष ने कहा हमारे फलित ज्योतिष शास्त्र मे लिखा है। बाबर ने कुछ सोचकर कहा ज्योतिष जी आप यह भी जानते होंगे कि आप और कितने वर्ष जिन्दे रहोगे, ज्योतिष ने कहा अभी मै 37 वर्ष और जिन्दा रहूंगा, बाबर ने म्यान से तलवार निकाली और एक ही झटके में ज्योतिष का सिर धड से अलग कर दिया और कह कि जिसको अपने अगले क्षण का पता नही ऐसे पाखण्डी पर क्या विश्वास किया जा सकता है और उस ऐतिहासिक युद्ध में बाबर की विजय हुई और ज्योतिष की बात मिथ्या हुई।

उदाहरण 2: आप कल्पना करो कि मेरे सामने एक भोजन का थाल पडा है और उसमे दस कटोरियों है अलग–अलग व्यंजनों की है। पहले मै कौन सी कटोरी का पदार्थ खाऊंगा ज्योतिष तो क्या स्वंय ईश्वर भी नही बता सकते है पहले मै कौन सी चीज खाऊंगा क्योंकि कर्म करना मेरे स्वतन्त्रता के अधिकार मे है।

उदाहरण 3. एक ब्राहमण काशी मे दस वर्ष ज्योतिष विद्या पढके अपने गांव मे आया गांव का एक उजट जाट लाठी लिये अपने खेत मे जा रहा था, नमस्ते पश्चता जाट ने पूछा आप कहां से आ रहे है, ब्रहामण बोला मै दस वर्ष काशी से ज्योतिष विद्या पढ के आ रहा हूँ। जाट ने पूछा महाराज ज्योतिष क्या होता है। ब्रहामण ने बताया हम अगले क्षण आने वाली बातों को पहले बता देते हैं जाट ने पूछा महाराज मै पूछूं तो आप बतायेंगे, क्यो नही अवश्य पूछिये। ब्रहामण बोला मै उच्च कोटि का भविष्य वक्ता बन गया हूँ। अब जाट मे कन्धे से लाठी उठाकर घुमाकर पूछा बता मै तेरे इस लाठी को कहां मारूंगा। यह सुनकर ब्रहामण नीचे ऊपर देखने लगा, यदि मैने कहा कि सिर पे मारेगा तो वह पैरो पर ठोकेगा यदि पैरो पर कहा तो यह सिर पर ठोकेगा। ब्रहामण सिर झुका कर नीचे देखने लगा। इसलिऐ फलित ज्योतिष पाखण्ड है।

नव ग्रहो को मानव पर लगाने का भ्रम

प्रश्न (सत्यार्थ प्रकाश): जब किसी ग्रहस्थ ज्योतिर्विदाभास के पास जाके कहते है के महाराज इसको क्या है ?तब वह कहते है इस पर सूर्यादि क्रूर ग्रह चढे है। जो तुम इनकी शान्ति, पाठ, पूजा, दान कराओ तो इसको सुख हो जाए, नही तो बहुत पीडित और मर जो तो भी आश्चर्य नही है।

उत्तर : कहिए ज्योतिर्वित! जैसी यह पृथ्वी जड है, वैसे ही सूर्य आदि लोक है। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ नही कर सकते। क्या ये चेतन है जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होकर सुख दे सकें।

भोली–भाली जनता को ठगने के लिये ग्रहो का प्रकोप का डर उनके दिलो में बिठा रखा है। प्रत्येक ग्रह जड है और पृथ्वी से लाखो गुना बडे है फिर वह एक छोटे से मनुष्य पर कैसे चढ सकते है।

उदाहरणः दो नवयुवक एक बलिष्ट शरीर बालक और दूसरा मरियल सा कमजोर शरीर वाले ज्योतिष के पास जाकर पूछने लगे महाराज हम पर कौन से ग्रह चढे है जो हमारे कोई भी कार्य सिद्ध नही होते। ज्योतिष ने बलिष्ट शरीर वाले युवक से कहा तुम पर सूर्य ग्रह मेहरबान है तुम्हारा कुछ भी अनिष्ट नही होगा और दूसरे कमजोर शरीर वाले युवक से कहा कि तुम पर सूर्य ग्रह चढे है तुम्हारा यह अनिष्ट करेंगे, जल्दी पूजा पाठ दान करो हम सूर्य ग्रह को शान्त कर देंगे।

यह सब कोतुहल एक विद्वान युवक देख रहा था, उससे रहा नही गया वह चुप भी कैसे रह सकता था ऋषि दयानन्द का भक्त जो था। उसने ज्योतिष से कहा मै अभी इन दोनो की परीक्षा ले सकता हूँ क्या । ज्योतिष जी ने अहंकार मे कहा अवश्य–अवश्य हमारा कथन कभी गलत नही होता है। अस्तु जून का महीना था दोपहर का समय था, विद्वान युवक ने दोनो पीढित युवको सेकहा मै तुम्हारी परीक्षा लूंगा दोनो के कपडे उतरवाये और नंगे पैर दोनो को पक्के फर्श पर खडा कर दिया और आधा घन्टा खडे रहने को कहा। किन्तु यह क्या जो बलिष्ट शरीर वाला युवका था जिस पर सूर्य ग्रह मेहरबान था वह चक्कर खाकर गिर गया और कमजोर शरीर वाला किन्तु दृढ इच्छा वाला वह युवक जिस पर सूर्य ग्रह कुपित थे ज्यो का त्यो खडा रहा अब आर्य युवक ज्योतिष से कहने लगा कहिए महाराज प्रत्यक्ष मे आपकी भविष्य वाणी असफल क्यो हुई है। वास्तव में सूर्य ग्रह जड है और ताप से अधिक कुछ नही दे सेता है। सूर्य की गरमी का प्रभाव दोनो पर बराबर पडा किन्तु सहन क्षमता मे दोनो अलग–अलग थे। इसलिए नव ग्रहो का ज्योतिष भ्रम है, धोखा है।

शनिग्रह

शनि ग्रह पृथ्वी से लाखो मील दूर है और कई लाख गुना बडा है–बताइए ज्योतिष महाराज वह शनि ग्रह एक छोटे से आदमी पर कैसे लग सकता है, शनि गृह के लगने से तो सारी पृथ्वी ही दब जायेगी। वास्तव में ईश्वरीय व्यवस्था में प्रत्येक ग्रह जड है और अपनी–अपनी धुरी पर केन्द्रित है। इस सृष्टि क्रम की व्यवस्था को बनाए रखते है। यह मानव जगत का उपकार ही करते है किन्तु अपकार कभी नही करते है।

उदाहरणः आश्चर्य होता है शनिवार को कुछ लोगो का धन्धा खूब चलता है वह एक बाल्टी मे तेल लेकर जगह–जगह चौराहो पर घरो मे शनि के नाम से लोगो को ढगते रहते है और अन्धविश्वासी लोग उनकी बाल्टी को सिक्को से भर देते है। क्या शनिदेव मांगने वाले लोगो पर मेहरबान होते है। नही यह उनका धन हरण का मार्ग है। और अधिक आश्चर्य होता है अब शनि को देवता बनाकर उनकी मूर्ति भी बना दी गई है और मन्दिर भी बना दिया गया है। ईश्वर भारत वासियों को सुमति दें।

परिवारो के प्रत्येक शुभ कार्यों में शुभ दिन मुहुर्त निकालना भी भ्रम है। वास्तव में पृथ्वी पर सब दिन बराबर होते है और एक जैसे होते है ऋतुओ के अनुसार व जलवायु के अनुसार अपना प्रभाव दिखाते है। वैसे प्रत्येक शुभ कार्य करने के लिये प्रत्येक दिन शुभ होता है किन्तु आप अपना शुभ कार्य तब करे जब ऋतु अनुकूल हो स्वास्थय अनुकूल हो परिवार सुख शान्ति मे हो वह दिन किसी भी समय शुभ कार्य के लिए शुभ होता है। एक ज्वलन्त उदाहरणः श्री राम चन्द्र जी कोई साधारण पुरूष न थे वह मर्यादा पुरूषोत्तम थे और उनके कुल गुरू वशिष्ट भी ऋषि ब्रह्मा के पुत्र थे, श्रीराम को गद्दी पर बैठाने का मुर्हत विशिष्ट ऋषि ने निकाला था। इसी मुर्हत मे श्री राम को चौदह वर्ष के लिये वनवास जाना पड़ा था। पीछे श्री राम के पिता दशरथ को पुत्र वियोग मे मृत्यू हे गई। तीनो रानिया विधवा हो गयी, आगे चलकर सीता का हरण हुआ, वशिष्ट की शुभ मुहुर्त शुभ कार्य हेतु व्यर्थ गया। इस ऐतिहासिक उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि शुभ व अशुभ मुहर्त ज्योतिष का चलन भी भ्रामिक है।

गणित ज्योतिष अन्त में:– वेदो की शिक्षा के आधार पर गणित ज्योतिष सत्य है, गणित ज्योतिष द्वारा हम सौ वर्ष पहले बता सकते है कि क्या होगा। जैसे कि तिथियों का हिसाब, दिनो का हिसाब ऋतुओं का परिवर्तन, सूर्य व चन्द्र ग्रहण, । चूकिं यह सारी चीजे चांद सूर्य और जमीन इन तीनो को नियमानुसार गति पर निर्भर है, जिसमे एक पल का भी अन्तर नही आता। अतः हम सौ साल पहले बतला सकते है कि अमुक तिथि, अमुक वार को अमुक ऋतु में और अमुक समय में सूर्य व चन्द्र ग्रहण होगा, तथा कारण को देखकर कार्य का अनुमान अर्थात कारण को देखकर होने वाले काम का अनुमान आदि।

आर्य समाज के चौथे नियम में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कहते है कि :– सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

मो0 9411512019,
9557641800

आर्यावर्त केसरी प्रकाशन समूह

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

विश्व भर में वेद के प्रचार-प्रसार व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर-घर पहुंचाने को संकल्पित आर्यावर्त केसरी विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा के लिए देश-विदेश से प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित करता है। आवेदन संक्षिप्त जीवनवृत्त के साथ दिनांक 28 फरवरी 2019 तक पहुंच जाने चाहिए। (आवेदन हिन्दी भाषा में ही स्वीकार किये जाएंगे)। पुरस्कार इस प्रकार हैं-

- **अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान प्रदान करने पर- अन्तर्राष्ट्रीय आर्यरत्न पुरस्कार।**
- **राष्ट्रीय स्तर पर वेद के प्रचार-प्रसार, समाज-सेवा के लिए- राष्ट्रीय आर्यावर्त भूषण पुरस्कार।**
- **नि:शक्त, गरीब, अनाथ, व गुरुकुलों की उत्कृष्ट सेवा व दानशीलता के लिए- आर्यावर्त सौम्या दानवीरश्री पुरस्कार।**
- **वैदिक साहित्य के विद्वान लेखक, कवि व पत्रकार के लिए- आर्यावर्त कलमश्री पुरस्कार।**
- **युवा लेखक, कवि, गायक, पत्रकार, समाजसेवी के लिए- आर्यावर्त युवा गौरव पुरस्कार।**

आवेदन भेजने का पता : सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

महर्षि दयानन्द और गौरक्षा

पं० नन्दलाल निर्भय

हमारा प्यारा आर्यावर्त (भारत भूमि) ऋषियों-मुनियों त्यागी-तपस्वी विद्वानों का प्यारा देश है। इस देश में संसार के सब देशों से ज्यादा महान पुरुष पैदा हुए हैं, जो ईश्वरभक्त, सदाचारी, परोपकारी थे। उन्हीं महान पुरुषों में से एक थे- जगद्गुरु दयानन्द महाराज।

महर्षि दयानन्द वेदप्रचार के बाद गौरक्षा के प्रश्न को ही सबसे अधिक महत्व देते थे। उनके विचार से मानव मात्र का कल्याण वैदिक पथ पर चलने से तो होगा ही, इसके साथ ही उसका हित व उपकार गोपालन से ही संभव है। इस बात को वे भली भांति जानते थे कि कृषि जितनी मानव मात्र के लिए जरूरी है, उतना ही जरूरी गोपालन है। इसका कारण कृषि और गोपालन एक-दूसरे के पूरक हैं। जब तक मनुष्य कृषि करता रहेगा, तब तक यदि वह अपना कल्याण चाहता है तो उसे गोपालन भी करना पड़ेगा। इसीलिए महर्षि ने गोरक्षा के लिए एक सभा बनायी थी, जिसका नाम 'गो कृष्णादि रक्षिणी सभा' रखा थां दुख का विषय है कि आज मानव ने कृषि कर्म तो चालू रखा, किंतु गोपालन करने का ध्यान कम कर दिया है और बैलों की जगह ट्रैक्टरों से जमीन जोतने लगा और गाय के दूध, घी, दही, मलाई की जगह मांस खाना व शराब पीना आरम्भ कर दिया। आज मानव अपने हर स्तर से चाहे वह बल हो, बुद्धि हो, या चरित्र हो, गिरता चला गया और आज उसकी स्थिति यह हो गयी है कि वह विनाश के कगार पर खड़ा है। किसी समय संसार का विनाश हो जाए, कोई कुछ नहीं कह सकता। इस बात को महर्षि दयानन्द ने पहले ही अच्छी तरह भांप लिया था कि मानव मात्र का विनाश या स्तर गिरने के सबसे मुख्य कारण दो ही हैं। पहला वेदों का पढ़ना-पढ़ाना छूट जाना, और दूसरा गोपालन पर ध्यान न देना।

पांच हजार वर्ष पहले जब ये दोनों चीजें अपने पूरे यौवन पर न थीं, तब हर बच्चा, चाहे वह राजा का हो या रंक का, पांच या आठ वर्षों के बाद गुरुकुल में चला जाता था। वहां आचार्य की गोद में बैठकर वेदाध्ययन करता था और पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ आचार्य और गोसेवा का कार्य करता था, और शारीरिक, आत्मिक, बौद्धिक व चारित्रिक बल से परिपूर्ण होकर जब पूर्ण यौवन अवस्था प्राप्त करके पच्चीस वर्ष बाद वह गृहस्थ में आता था, तब वह अपने गृहस्थ जीवन में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अपनी उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करते हुए आनन्दित व सुखी बना रहता था। उस समय सब लोग वेदमार्ग पर चलते थे और गऊ के शुद्ध दूध का पान करते थे। तब आपस की कलह, द्वेष, घृणा, लड़ाई, वैमनस्य होने को तो कोई प्रश्न ही नहीं था। उस सयम सब लोग सदाचारी, संयमी, परिश्रमी, ईमानदार, कर्तव्यपरायण, दयालु, परोपकारी, न्यायकारी आदि मानवीय गुणों से विभूषित होते थे और परस्पर सद्व्यवहार रखते हुए प्रेमपूर्वक रहते थे। तब सारा विश्व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के समान थां मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो।

महर्षि दयानन्द वही प्राचीन सुखद व आनन्दपूर्ण स्थिति विश्व में पुनः लाना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने नारा दिया था- 'वेदों की ओर लौटो' यानी वेदों का पढ़ना-पढ़ाना व द्वारा ही स्थिति के बदलने का सही उपाय समझकर ऋषि जी ने इन दोनों कार्यों पर केवल विशेष बल ही नही दिया, बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन ही समर्पित कर दिया। वेद प्रचार के लिए महर्षि ने क्या-क्या किया, यह किसी से छिपा नहीं है, इसे सारा संसार जानता है। उन्होंने अपने जीवन में खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना सब कार्यों को गौण समझकर वेद-प्रचार करना ही मुख्य कार्य समझा। वेद-प्रचार के लिए कितनी ही बार जान को जोखिम में डालकर वेद-विरोधियों से लड़ना पड़ा, सैकड़ों शास्त्रार्थ किये, सत्रह बार विष पिया, विरोधियों की गालियां सुनीं, ईंट-पत्थर खाए, मान-अपमान सहा, पहाड़ों व जंगलों की खाक छानी, फिर भी वेद-प्रचार करने से विचलित व विमुख नहीं हुए। इसी वेद-प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सन् 1875 ई0 में उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की, और आर्य समाज के दस नियमों में तीसरा नियम 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का यानी सभी श्रेष्ठ पुरुषों का सिर्फ धर्म ही नहीं, बल्कि परम धर्म है।'' बताकर अपनी अभिलाषा प्रकट करते हुए इस कार्य पर विशेष बल दिया, ताकि आर्य समाजी इस कार्य को करना न भूलें।

गाय की रक्षा के लिए महर्षि ने क्या-क्या प्रयास किये, इसके बारे में काफी लोग अनभिज्ञ हैं। इसके ऊपर मैंने कुछ प्रकाश डालने का प्रयास किया है, कृपया पाठकगण इससे लाभ उठायें।

महर्षि जी अच्छी प्रकार जानते थे कि वेद जैसे अपनी शिक्षाओं से मनुष्य को चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम को परोपकार की भावना से करते हुए मोक्ष को प्राप्त कराता है, उसी प्रकार गऊ भी अपने शुद्ध दूध, घी, दही, छाछ से मनुष्य के शरीर को हृष्ट-पुष्ट तथा बुद्धि को शुद्ध व पवित्र बनाती है। इससे मनुष्य धर्म के कार्य करता है। मनुष्य गऊ के पंचगव्य से अनेकों प्रकार की दवाइयां बनाकर तथा बैलों द्वारा कृषि व माल ढोने का काम करके धन उपार्जन करता है, तथा शरीर की शक्ति व पवित्र बुद्धि से अपनी सब कामनाएं (इच्छाएं) पूरी करता है, तत्पश्चात् सब काम धर्मानुसार करने से मोक्ष पाने का भी अधिकारी बन जाता है। इसलिए वेद के प्रचार के समान गउ पालन भी उपयोगी व लाभदायक है। इस बात को महर्षि ने समझा और दोनों की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। सबसे पहले महर्षि ने गौ माता की दयनीय दशा देखकर 'गोकरुणानिधि' नाम की एक लघु पुस्तक लिखी, जिसमें गोहत्या पर अपने हृदय की वेदना ही प्रकट नहीं की, बल्कि फूट-फूटकर रोये भी। ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण आस्था व विश्वास रखते हुए भी ईश्वर को यहां तक कोसा कि ''हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो

कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गयी है? क्यों नहीं इनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान देता? और क्यों इनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसाहारियों की आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता, जिससे ये इन बुरे कर्मों से बचें।

गऊ मानव मात्र के लिए कितनी उपयोगी व जरूरी है, वह अपनी उम्र में कितने हजार लोगों को पालन-पोषण करती है, यह सब दर्शाया है। यदि गऊ के हत्यारे इस पुस्तिका को पढ़ लें और चिन्तन-मनन करें तो कोई पत्थर-हृदय ही होगा, जो पिघल न जाए। खेद का विषय है कि आज सभी गौहत्यारी सरकारें, जो गोपालक कृष्ण को भगवान का रूप मानती हैं और महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी और विनोवा भावे के आदर्शों पर चलने वाली कहलाती हैं, फिर भी गोहत्या बंद नहीं करातीं। इसीलिए ये सभी सरकारें सिर्फ निंदनीय ही नहीं, भर्त्सना करने योग्य हैं। महर्षि दयानन्द जी ने सबसे पहली गऊशाला राव-युधिष्ठिर रेवाड़ी नरेश के द्वारा रेवाड़ी में खुलवाई थी। इसके साथ ही हजारों गऊशालाएं पूरे भारत में चल रही हैं। यह सब महर्षि दयानन्द महाराज की कृपा का फल है। अतः हम सबको गौभक्त बनकर महर्षि दयानन्द महाराज का सपना साकार करना चाहिए। इसी में विश्व की भलाई है।

-आर्य सदन, बहीन,
जिला- पलवल (हरियाणा)

ऋग्वेद
।। ओ३म् ।।
यजुर्वेद

'सत्यार्थ प्रकाश'

के प्रकाशन हेतु आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा की अनूठी एवं क्रांतिकारी योजना

● **पहली बार सत्यार्थ प्रकाश की लगातार 1,00,000 प्रतियाँ छापने का दृढ़ संकल्प**

विशेष : प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' व आर्यावर्त केसरी प्रकाशित किये जाएंगे। घोषित धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं हैं। ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी घोषित धनराशि भेजी जा सकती हैं। धन्यवाद

।। योजना में सम्मिलित होने की शर्तें ।।

- सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के इस महायज्ञ में आप भी अपनी आस्थाओं की पावन आहुतियाँ भेंट कर सकते हैं।
- न्यूनतम रु0 3100/- की राशि भेंट करने वाले आर्यसमाजों के प्रधान, मंत्री व कोषाध्यक्ष के रंगीन चित्र सत्यार्थ प्रकाश के अंत में 1000 प्रतियों में प्रकाशित होंगे तथा उन आर्यसमाजों को सत्यार्थ प्रकाश की 31 प्रतियां इस सात्विक राशि के उपलक्ष्य में भेंट की जाएंगी।
- सभी महानुभाओं को उनके द्वारा भेंट की गयी धनराशि के बराबर मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश निशुल्क भेंट किए जाएंगे, अर्थात् यदि आपने रुपये 1,00,000/- (एक लाख रु0) भेंट किये हैं, तो आपको सत्यार्थ प्रकाश की 1000 प्रतियां, अथवा रु. 51,000/- (इक्यावन हजार रुपये) भेंट किये हैं, तो 510 प्रतियाँ निःशुल्क भेंट की जाएंगी अथवा रु. 5100/-, 3100/-, 2100/-, 1100/- की राशि भेंट करने पर सत्यार्थ प्रकाश की क्रमशः 51, 31, 21, 11 प्रतियां भेंट की जाएंगी। इस प्रकार आप जितनी धनराशि प्रदान करेंगे, उतने ही मूल्य के सत्यार्थ प्रकाश आपको भेंट किए जाएंगे।

: प्रकाशन की विशेषताएं :

1. पुस्तक का आकार 20 X 30 का 8 वां भाग
2. कागज की क्वालिटी 80 GSM कम्पनी पैक
3. सजिल्द, उत्तम व आकर्षक कलेवर
4. फोन्ट साइज 16 प्वाइंट
5. 'सत्यार्थप्रकाश के अंत में इस ग्रन्थ व महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से जुड़ी ऐतिहासिक विरासतों के रंगीन चित्र भी प्रकाशित होंगे।
6. 'सत्यार्थप्रकाश' की पृष्ठ संख्या लगभग पांच सौ है तथा इसका मूल्य 150/- प्रति ग्रन्थ है।

पता- डॉ. अशोक कुमार आर्य 'सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि', आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 09412139333, E-mail : aryawartkesari@gmail.com

सामवेद
अथर्ववेद

सत्यार्थ प्रकाश

का एक और नवीन संस्करण प्रकाशित

साइज़ - 18 x 23 x 8

मूल्य- अजिल्द- 60
सजिल्द- 70

दानदाताओं तथा सहयोगी महानुभावों के चित्र प्रकाशन की सुविधा। जन-जन तक पहुंचाएं ऋषिवर दयानन्द का यह क्रान्तिकारी ग्रन्थ

गतांक से आगे...

कर्मफल-रहस्य

चन्द्रपाल सिंह सिरोही

1- कुर्वन्वेत्त कर्माणि......................
यजु0- 40/2
2- आयुषं जमदग्नेः कस्य पश्य........
.यजु0 3/62
3- दीर्घा मनु प्रसितिमायुषे................
. यजु0 1/20
4- शतं हिमा सूर्य स्था......................
यजु0 2/27
5- भूयस्य शरदः शतात.....................
. यजु0 36/24
6- अग्न ऽ आयूऽसि पवस................
यजु0 35/16
7- उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते......................
.अथर्व0 19/63/1, आदि

मनुस्मृति, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में आयु बढ़ाने-घटाने के सैकड़ों मंत्र, श्लोक प्रमाणस्वरूप लिखे हैं, जो विद्वानों के लिए सर्वविदित हैं। हम सभी मंत्रों, श्लोकों को लिखकर लेख को बढ़ाना नहीं चाहते। आयु का घटना-बढ़ना क्या है? कैसे है? स्वमन्तव्य में प्रकाश डालेंगे।

क्या आयु श्वासों पर आधारित है:

किसी भी ग्रन्थ में इसका कोई प्रमाण नहीं है। हमारे जीवन के लिए वायु, अग्नि, अन्न, जल आदि की महती आवश्यकता है। किसी के भी अभाव से मृत्यु हो जाती है। श्वास (वायु) प्राण का भोजन है। शरीर की अन्य क्रियाओं की तरह श्वास लेना एक सामान्य क्रिया है, जैसे हृदय का धड़कना, नाड़ी चलना, पलक झपकना, भूख-प्यास लगना, सोना, जागना आदि सभी क्रियाओं के मेल से जीवन चलता है।

श्वासों की गिनती पर आधारित आयु मानने वाले कछुए का उदाहरण देते हैं। कछुआ कम श्वास लेता है और 100 वर्षों से अधिक जीता है। मगर सभी कछुए 100 वर्ष नहीं जीते। अल्प आयु में ही मारकर खा लिये जाते हैं। 100 वर्ष कछुए की औसत आयु है। गुलाम भारत में मनुष्य की आयु 28 वर्ष थी। आज 68 वर्ष है। किसी समय भारत में मनुष्य की औसत आयु 100 वर्ष रही होगी। भिन्न-भिन्न योनियों के कर्म, भोग अलग-अलग हैं। उसी के अनुसार उनकी आयु भी अलग-अलग है। एक-दूसरे की तुलना करना ठीक नहीं है। हाथी और खरगोश की क्या तुलना है?जलचर थल पर और थलचर जल में जीवित नहीं रह सकते। संसार आश्चर्यजक अजूबों से भरा है।

निश्चित आयु वाले कहते हैं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे योगी, आजन्म ब्रह्मचारी की मृत्यु 59 वर्ष में हो गयी, क्योंकि आयु निश्चित थी। निश्चित न होती, तो उन्हें 300, 400 वर्ष जीना चाहिए था।

श्वासों पर आधारित जीवन मानने वाले भी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का ही उदाहरण देते हैं। कहते हैं कि स्वामी जी 18 घंटे की समाधि लगाते थे, फिर भी 59 वर्ष ही जीये। यदि वह समाधि नहीं लगाते, तो अपनी श्वासों को शीघ्र ही समाप्त कर 20 या 30 वर्ष ही जीवित रहते। वाग्जाल के सिवाय उनके पास शास्त्रों का कोई प्रमाण नहीं है।

कालाकाल मृत्यु :

अनिश्चित आयु मानने वाले अकाल मृत्यु मानते हैं। निश्चित आयु मानने वाले अकाल मृत्यु नहीं मानते। कहते हैं कि प्रत्येक जीव की आयु निश्चित है, दुर्घटना तो साधन है, भोग भोगने में सहायक है। हमारा मत है कि अकाल मृत्यु नहीं होती, क्योंकि काल (समय) अनन्त है, हर समय रहता है।

अकाल मृत्यु क्या है, और समाज में क्यों प्रचलित है- इस पर विचार करते हैं। मृत्यु दो प्रकार से होती है- एक स्वाभाविक, दूसरी भौतिक, दैविक घटनाओं से। जन्म से लेकर बुढ़ापे तक जीने के बाद मृत्यु को स्वाभाविक मृत्यु कहते हैं। इसमें जीवात्मा कर्म करते हुए, भोग भोगते हुए, ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के अशक्त होने तक जीवित रहता है। ऐसी मृत्यु दुखदाई होने पर भी परिवारीजन विमान निकालते हैं, ढोल-ताशे बजाते हैं। दूसरी मृत्यु दुर्घटना से किसी जीव के पापकर्म द्वारा कत्ल करना, पानी में डूबना, अग्नि में जलना, भूकम्प, सुनामी, सर्पदंश आदि अनेकों कारणों से होती है। उसे अकाल मृत्यु कहते हैं। उसे अकाल मृत्यु इसलिए कहते हैं, क्योंकि उस मनुष्य की सभी इन्द्रियां स्वस्थ थीं, कर्म करने और भोग भोगने में सक्षम थीं। अभी वह अपने परिवार, समाज, राष्ट्र और संसार का बहुत उपकार कर सकता था। मगर अपने कर्तव्यों को पूरा करने से पहले ही भौतिक या दैविक आपदा से मृत्यु हो गयी। अकाल मृत्यु का तात्पर्य यहां किसी समय (काल) से नहीं है। यहां अकाल मृत्यु का अर्थ उस समय से है, जिसमें वह जीवात्मा अभी बहुत से कर्म कर सकता था, किये कर्मों के भोगों को भोग सकता था। परमात्मा तो उस जीव को बाकी बचे भोगों को भोगने के लिए दोबारा उसी योनि (जाति) में नियमानुसार भेज देगा, मगर उसकी मृत्यु से परिवार, समाज और राष्ट्र को जो क्षति हुई, उसी को ध्यान में रखकर अकाल मृत्यु कह देते हैं, जो व्यावहारिक भाषा में गलत नहीं है। अगर वही मनुष्य 5, 10, 20, 30, 50 वर्ष की आयु में किसी भयंकर बीमारी से जर्जर होकर मरता है, तो कोई उसे अकाल मृत्यु नहीं कहता। सभी कहते हैं कि अच्छा हुआ दुख से छूट गया, क्योंकि वह कोई भी कर्म करने व भोग भोगने के लायक नहीं था।

100 वर्ष समय (आयु) की इकाई है:

हमारे शास्त्रों में कम से कम 100 वर्ष जीने की कामना तो की ही गयी है, शतात कहकर 300, 400 वर्ष तक स्वस्थ इन्द्रियों के साथ जीने की भी कामना की है। 100 वर्ष मनुष्य योनि में जीने की इकाई है, औसत आयु है। कैसे समझें- हम व्यवहार में एक, दो, तीन के बाद दसियों, बीसियों, पचासों, सैकड़ों, हजारों, लाखों, करोड़ों, अरबों का शब्दोच्चारण करते हैं। व्यवहार में तीस, चालीस, साठ, अस्सी, नब्बे, दो सौ, तीन सौ से नौ सौ तक, ग्यारह सौ से नब्बे हजार तक, लाख से करोड़ के बीच के अंकों का उच्चारण दैनिक प्रयोग में नहीं करते। मानव योनि में हम दस वर्ष, बीस वर्ष की आयु तक ज्ञानार्जन करते हैं। पचास वर्ष की आयु तक हम जवान होते हैं, कर्म करने और भोगने में सक्षम रहते हैं। पचास वर्ष के बाद हमारी कार्यक्षमता घटने लगती है। और 100 वर्ष तक आते-आते हमारी दसों इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं। हम कर्म करने व भोग भोगने लायक नहीं रहते। शास्त्रकारों ने इसी बात को ध्यान में रखकर इन्द्रियों के शिथिल होने तक कम से कम 100 वर्ष तक जीने की कामना की है। यदि इन्द्रियां 100 वर्ष में भी कार्य करने लायक हैं, तो शतात कहकर तीन सौ, चार सौ वर्षों तक जीने की भी कामना की है। इस प्रकृति में हम 1000 वर्ष जी नहीं सकते, इसलिए 100 वर्ष को इकाई मानकर कम से कम 100 वर्ष जीने की कामना की है।

अपने और दूसरे जीवों के कर्म :

आयु निश्चित मानने वाले कहते हैं कि जीवात्मा अपने ही किये कर्मों का भोग भोगता है। दूसरे जीवों के कर्मभोग भोगने में केवल सहायक है। मनुष्य की आयु निश्चित है। उसे तो मरना ही था। उसे हमने मार दिया। हम केवल साधन मात्र हैं। इस पर हमारा कहना है कि राजा किसी अपराधी को मृत्युदण्ड देता है। जल्लाद राजा की आज्ञा से उसे फांसी दे देता है। जल्लाद कातिल नहीं माना जाता, क्योंकि उसने तो राजाज्ञा का पालन किया है। उसी तरह यदि हम किसी का वध कर देते हैं, तो न्यायालय हमें दण्ड क्यों देता है। हम तो परमात्मा के दण्डविधान में साधन मात्र हैं। दण्ड तलवार को नहीं, तलवार से काटने वाले को मिलता है, क्योंकि तलवार तो केवल साधन मात्र है।

प्रश्न उठता है कि जीव का वह कौन सा स्वतंत्र कर्म है, जिसका फल (भोग) बनेगा।

हमारा मत है कि जीव का कोई भी कर्म स्वतंत्र नहीं है, जो अपने लिये हो। हम जो भी कर्म करते हैं, उसका तथा दूसरे जीवों के कर्मों का फल हम भोगते हैं। जीवों के अच्छे-बुरे कर्मों से ही अन्य जीवों को सुख-दुख मिलते हैं। यथा-

1- यदिनात्मनि पुत्रेषु च चेत
पुत्रेषु नप्तृषु।
न त्वे वन्तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति
निष्फलः।।

अर्थ- यदि अधर्म का फल कर्ता की विद्यमानता में न हो, तो पुत्रों के समय में, और पुत्रों के समय न हो, तो नातियों के समय में अवश्य प्राप्त होता है। किंतु यह कभी नहीं हो सकता कि कर्ता का किया हुआ कर्म निष्फल होवे। (संस्कारविधि गृहाश्रम)

2- दुख तीन प्रकार के हैं- 1. आध्यात्मिक, 2. आधिभौतिक, 3. आधिदैविक। आधिभौतिक दुख शत्रु से, व्याघ्र से, सर्प आदि दूसरे जीवों से होता है। (सत्यार्थप्रकाश, प्रथम समु0)

अर्थ त्रिविधि, दुःखात्यन्त निवृत्ति......... सांख्य दर्शन- 1/1

3- एक अपराधी को छोड़ने से सहस्रों धर्मात्मा पुरुषों को दुख देना है। (स0प्र0 समु0 7)

4- पुत्र को पुत्र इसलिए कहते हैं कि वह माता-पिता को दुखों से बचाता है। (मनु0 9/138) आदि अनेकों प्रमाण हैं।

संसार में जीवात्मा अकेला नहीं जी सकता। हजारों-लाखों जीवों के कर्मों के सहयोग से हमारा जीवन चलता है। हमारे शरीर में भी लाखों-करोड़ों जीवात्माओं का वास है, जो जीवन चलाने में सहायक हैं। एक उदाहरण से समझें- हम बाजार में एक सुई खरीदते हैं। सुई कैसे बनी, विचार करें। सुई बनाने के लिए हजारों श्रमिकों ने खान से लोहा निकाला, जिन उपकरणों से निकाला, उन औजारों को बनाने में हजारों श्रमिक लगे हैं, यथा- परात, गैती, फावड़ा, कुदाल आदि। कच्चे लोहे को जिस साधन से ट्रक, मालगाड़ी आदि से कारखाने पहुंचाया गया, उस कारखाना, रेल, ट्रक आदि बनाने में लाखों मजदूर लगे हैं। मशीनें लगी हैं। ईंट, सीमेंट, बालू, बदरपुर, सरिया, गाटर, पटिया आदि सैकड़ों प्रकार का सामान बनाने में, श्रमिकों के कपड़े, जूते, चप्पल, भोजन, फल, दूध आदि सामान उपलब्ध कराने में कितने श्रमिकों का श्रम लगा है, अनुमान नहीं लगा सकते। एक रुपये में सुई खरीदी। रुपये बनाने की टकसाल में, रुपये का कागज बनाने के मिल में कितने श्रमिक लगे हैं, सोच भी नहीं सकते। अर्थात् एक सुई खरीदने पर हम लाखों-करोड़ों जीवात्माओं के ऋणी हो गये। हमारे कर्म से भी अन्य जीव कर्जदार होते हैं। इसी ऋण को उतारने-चढ़ाने का सिलसिला जन्म-जन्मान्तरों तक चलता रहता है। अर्थात् जीवों के कर्मों के फलों के आदान-प्रदान से ही सृष्टि चलती है।

सकाम-निष्काम कर्म :

हमारे शास्त्र निष्काम कर्म करने की आज्ञा देते हैं- कर्मण्येवाधिकारस्ते... ......(गीता- 2/47)

हमारा मानना है कि जीव का कोई भी कर्म निष्काम नहीं होता। परमपिता परमात्मा प्रत्येक कर्म का फल देता है। किसी दुर्घटना में घायल व्यक्ति को हमने अस्पताल पहुंचा दिया। उसके प्राण बच गये। इसमें हमारा कोई लोभ-लालच नहीं है। केवल मनुष्यता के नाते हमने यह कर्म किया। परन्तु परमात्मा तो हमको इस शुभकर्म का सुखरूप फल देगा ही। इसीलिए गीताकार ने कहा कि जीव को केवल कर्म करने का अधिकार है। कर्म करने क बाद वह परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में चला जाता है। इसलिए कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। फल परमात्मा देगा ही। "अवश्यमेव भोगतव्यम् कृतं कर्म शुभाशमम्।" जब प्रत्येक कर्म का फल मिलना ही है, तो निष्काम कर्म कहां रहा, इच्छा करो या मत करो?

मगर इच्छा तो जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है। गुण गुणी से अलग नहीं हो सकता। बगैर इच्छा तो योगी भी योग नहीं करता। उसकी भी प्रबल इच्छा है कि मैं जन्म-मरण के बन्धन से छूट कर मुक्ति प्राप्त करूं। यह इच्छा मोक्ष प्राप्त करने तक बनी रहती है। योगी मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, क्योंकि प्रयत्न भी जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है।

क्रमशः

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-

स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। **-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099**

उत्तर भारत का लोकप्रिय पाक्षिक समाचार-पत्र

आर्यावर्त केसरी

पाठक संख्या – 50000

विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें-

सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.)-244221
फोन : 05922-262033, 09412139333
ई-मेल : aryawartkesari@gmail.com

आध्यात्मिक चिन्तन एवं वेदानुशीलन पर आधारित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु' द्वारा लिखित पुस्तक

आयुष्मान् भव

(दीर्घ अर्थात् लम्बी आयु प्राप्त करो)
१२० पृष्ठ, रंगीन आवरण
: पुस्तक प्राप्ति स्थल :
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती 'वेदभिक्षु'
आर्यसमाज मन्दिर, बिहारीपुर
बरेली (उ0प्र0)– 243003
चल0 : 094123721179, 9759527485
मूल्य : 25 रुपये

आज ही मंगाएं यह संग्रहणीय पुस्तक

देश-विदेश में प्रसारित होने वाले

आर्यावर्त केसरी

में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

आर्यावर्त केसरी वर्तमान में देशभर के कोने-कोने के साथ ही विश्व के अनेक देशों में प्रसारित हो रहा है। विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे अपने व्यक्तिगत विज्ञापन, शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित कराकर लाभ उठायें।

विज्ञापन दर इस प्रकार है-

पूरा पृष्ठ रंगीन, एक अंक का शुल्क- 12000/- रुपये
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/2 पृष्ठ का शुल्क- 6500/-
अन्दर के पृष्ठ रंगीन, एक अंक, 1/4 पृष्ठ का शुल्क- 3500/-
स्थाई अथवा एक बार से अधिक प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों पर विशेष छूट देय है। **-प्रबन्धक (विज्ञापन), मोबा. : 8630822099**

अवश्य पढ़ें- आज ही मंगाएं

आर्य समाज की विचारधारा, वैदिक चिन्तन, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों को जानने के लिए पढ़िए

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित
तथा आचार्य क्षितीश वेदालंकार द्वारा लिखित लघु पुस्तिका

आर्य समाज की विचारधारा

प्रत्येक परिवार, आर्य समाज तथा विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिए यह लघु पुस्तिका। उत्सवों, साप्ताहिक सत्संगों, धार्मिक, सामाजिक अनुष्ठानों तथा शोभायात्रा आदि में सैकड़ों की संख्या में बांटें यह पुस्तिका, और जन-जन तक पहुंचाएं आर्य समाज व ऋषि दयानन्द सरस्वती की वैदिक विचारधारा।

न्यूनतम ५०० पुस्तकें लेने पर वितरक में नाम व पता प्रकाशन की सुविधा, तथा मूल्य में भी विशेष छूट।

हमारा पता है- आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा-244221 (उ.प्र.), मो० : 09412139333

योग भगाए रोग रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है

ताड़ासन

विधि :–

1. सबसे पहले अपने पैरों की मदद से सीधे खड़े हों।

2. अपने दोनों पैरों के बीच थोड़ा सा जगह बनायें।

3. उसके बाद एक लम्बी साँस के साथ अपने पैरों की उँगलियों की मदद से शरीर को थोड़ा ऊपर उठायें और अपने दोनों हांथो को धीरे-धीरे उपर उठायें। उसके बाद अपने एक हाँथ की उँगलियों से दूसरी हाँथ के उँगलियों को जोड़ें।

4. कम से कम १५-३० सैकेंड इस मुद्रा में रहें और अपने शरीर को ऊपर की और खीचें।

5. उसके बाद धीरे-धीरे अपने हांथों को सामान्य स्तिथि में ले आयें।

लाभ :–

1. यह आसन उन लोगों के लिए ज्यादा फायदेमंद साबित होता है जो अपना लम्बाई बढ़ाना चाहते हैं।

2. मुद्रा में सुधार होता है।

3. रीढ़ की समस्याओं से दूर रखता है।

आओ योग करें

इस स्तंभ के अन्तर्गत योग-ऋषि स्वामी रामदेव जी द्वारा प्रस्तुत योग संबन्धी सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि इस स्तम्भ से पाठकगण लाभान्वित होंगे और योग को अपनी जीवनशैली बनाकर 'योग युक्त विश्व- रोग मुक्त विश्व' की ओर उद्यत होंगे। -सम्पादक

हमारे जीवन में योगासन तथा प्राणायाम का विशेष महत्व है। हमें नियमित रूप से इनका अभ्यास करना चाहिए। इससे शरीर निरोगी रहता है तथा व्यक्ति दीर्घायुष्य को प्राप्त करता है। प्रातःकाल की बेला में हम नियमित रूप से योगाभ्यास तथा प्राणायाम करने का संकल्प लें।

- संपादक

सत्यार्थप्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

सत्यार्थप्रकाश के मर्म को समझने-समझाने का दायित्व विद्वानों का है। हमारा प्रयास सत्यार्थप्रकाश के विद्वान तैयार करना है, जो महर्षि दयानन्द के सधर्म रथ को आगे बढ़ा सकें। इसी उद्देश्य से आर्यावर्त केसरी पाक्षिक के सान्निध्य में श्री सुमन कुमार वैदिक के संयोजन में सत्यार्थप्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है।

परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट- मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय की छायाप्रति के साथ 150/- रुपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या-30404724002 (IFSC कोड SBIN 0000610) में 200/- रुपये जमा कराने होंगे तथा रसीद की छायाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक- 01 अक्टूबर 2018 से प्रारम्भ हो चुके हैं। पंजीकरण आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

प्रथम पुरस्कार- एक लाख रुपये तथा स्मृति चिह्न
द्वितीय पुरस्कार- पचास हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
तृतीय पुरस्कार- पच्चीस हजार रुपये तथा स्मृति चिह्न
अनेक नामित पुरस्कार- इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।
पच्चीस पुरस्कार- एक-एक हजार रुपये।

-: कैसे बनेंगे विजेता :-

(1) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तरपुस्तिका में लिखना होगा।
(2) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।
(3) आर्यावर्त केसरी के 25 सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।
(4) पत्र-व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का आयोजन दिनांक- 07 जुलाई 2019 को इन प्रस्तावित केन्द्रों- दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजड़, कोटा, हरिद्वार, उदयपुर, अहमदाबाद आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा।

विशेष :

1- जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार-मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
2- अपने प्रियजनों की स्मृति में उनके नाम से।
3- सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा की निधि हेतु मुक्तहस्त से दान दें, रजिस्ट्रेशन कराने में अक्षम प्रतिभागियों को शुल्क में मदद दें।
4- आयोजन में हमसे जुड़कर सहयोग करें, तथा अपने शहर में परीक्षा का केन्द्र बनवाएं। धन्यवाद,

सुमन कुमार वैदिक- मुख्य संयोजक
निवास- जे.380, बीटा-II,
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र) मो. 8368508395

डॉ० अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
मो. 9412139333

डॉ० अनिल रायपुरिया- संयोजक
नि. कोट बाजार, अमरोहा
मोबा. : 9837442777

श्री, समृद्धि, यश, वैभव, सुस्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की दें

मंगलकामनाएं

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, अथवा किसी विशेष उपलब्धि जैसे पावन अवसरों पर अपने परिजनों, मित्रों व शुभचिन्तकों को बधाई व शुभकामनाएं देना न भूलें।

आओ आर्यावर्त केसरी के माध्यम से ऐसे बधाई संदेश व शुभकामनाएं प्रकाशित कराएं...

और प्रदान करें

आर्यावर्त केसरी के प्रचार-प्रसार यज्ञ में 501/- की सहयोग रूपी पावन आहुति।

-सम्पादक (मोबा. : 9412139333)

अब आप आर्यावर्त केसरी के नियमित स्तम्भों में निरन्तर पढ़ते रहेंगे महत्वपूर्ण सामग्री

इन स्तम्भों के लिए सचित्र सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं

ये हैं आर्यावर्त केसरी के कुछ महत्वपूर्ण स्तम्भ

♦ ऐसे होते हैं आर्य, ♦ भारतवर्षीय गौशालाएं, ♦ प्रकाशित आर्ष साहित्य- पुस्तकों की समीक्षा, ♦ आर्य जगत की महान विभूतियां ♦ आर्य जगत के लोकोपयोगी न्यास (ट्रस्ट), ♦ आर्य जगत के गुरुकुल, ♦ आर्य जगत के प्रकाशक और प्रकाशन, ♦ आर्य जगत की ऐतिहासिक धरोहर, ♦ आर्य जगत के क्रांतिवीर- अमर सेनानी- शहीद, ♦ आर्य जगत के मूर्धन्य प्रवक्ता व तपस्वी सन्यासी वृन्द, ♦ आर्य जगत के भजनोपदेशक, ♦ आर्य जगत द्वारा संचालित प्रकल्प, ♦ आर्य जगत की शिक्षण संस्थाएं और काव्यजगत, योग भगाये रोग, खानपान और स्वास्थ्य जैसे अन्य कई नियमित कॉलम।

कृपया उपर्युक्त स्थाई कॉलमों (स्तम्भों) के लिए सचित्र सामग्री भेजें प्रकाशनार्थ। साथ ही, अपने प्रियजनों को दें जन्म दिवस आदि की हार्दिक शुभकामनाएं तथा दिवंगत दिव्यात्मनों का करें भावपूर्ण स्मरण।

आर्यावर्त केसरी के इस अत्यन्त व्यय साध्य, समय साध्य व श्रम साध्य प्रकाशन यज्ञ में आपकी तन-मन-धन से सहयोग रूपी पावन आहुति भी सादर निवेदित हैं। मंगलकामनाओं सहित,

- डॉ० अशोक कुमार आर्य,
सम्पादक (9412139333)

टंकारा चलो

आर्यावर्त केसरी प्रबंध समिति के नेतृत्व में गतवर्षों की भांति अहमदाबाद, द्वारिका, पोरबंदर, सोमनाथपुरी व टंकारा आदि का परिभ्रमण कार्यक्रम २६ फरवरी से ०६ मार्च २०१९ तक

विस्तृत रूपरेखा पृष्ठ ४ पर देखें।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त केसरी- सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार योजना

विस्तृत जानकारी पृष्ठ- १५

सुमन कुमार वैदिक
8368508395, 9456274350
डॉ. अनिल रायपुरिया
9837442777

आर्यावर्त केसरी के सदस्यों से विनम्र अनुरोध

आर्यावर्त केसरी के सभी सम्मानित सदस्यों से अनुरोध है कि उनकी वार्षिक सदस्यता अवधि नाम व पते की स्लिप पर अंकित रहती है। अतः स्लिप पर अंकित अवधि के अनुसार यथासमय अपना वार्षिक सदस्यता सहयोग भेजते रहा करें। जिन मान्य सदस्यों ने अभी तक अपनी वार्षिक सदस्यता–राशि जमा नहीं की है, वे कृपया मनीआर्डर द्वारा आर्यावर्त केसरी के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त कर लें, ताकि उन्हें आर्यावर्त केसरी निरंतर मिलता रहे।

प्रबन्धक (प्रसार)– आर्यावर्त केसरी

ऋग्वेद
यज्ञ रचाओ पर्यावरण बचाओ

卐 ओ३म् 卐
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

यजुर्वेद
॥ सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय॥

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम

महर्षि दयानंद जी महाराज

पर्यावरण शुद्धि हेतु वैदिक यज्ञ

यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म

जगत गुरू श्रीकृष्ण महाराज

दो दिवसीय-यज्ञ, भजन, एवं पर्यावरण शुद्धि का त्रिवेणी संगम

आज दूषित एवं अशान्त वातावरण से मानव ही नहीं बल्कि प्राणि मात्र का जीवन अति व्याकुल एवं विभिन्न बीमारियों से त्रस्त है। पर्यावरण अशुद्धि के कारण ही समाज में अशान्ति तनाव, अवसाद, मानसिक रोगों का वातावरण बना हुआ है, जिसका एक मात्र निदान यज्ञ एवं ऋषियों की वैदिक मान्यताओं पर ही निर्भर है एवं इसके लिए समाज के हर व्यक्ति को अपने-अपने स्तर पर प्रयास करने की महती आवश्यकता है। शुद्धि एवं कल्याण हेतु इस यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है इसके द्वारा ही स्वस्थ एवं चरित्रवान समाज का निर्माण होगा जिससे समाज में व्याप्त भय, भ्रम, हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार एवं गंभीर रोगों का अंत होगा।

अतः आप से विनम्र निवेदन है कि परिवार सहित कार्यक्रम में उपस्थित होकर कल्याण कारी लाभ प्राप्त करें।

विशेष निवेदन :- पर्यावरण शुद्धि हेतु एवं परिवार में सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्त करने के लिए इस यज्ञ कम में श्रमापर्ण सहयोग एवं यजमान बनकर पुण्य प्राप्त करें।

यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव, अपना स्थान सुरक्षित करने हेतु दिनांक 05/02/2019 तक श्री इन्द्रदेव गुप्ता (आई. डी. गुप्ता.) बी-102/15, नौएडा मो0 8368224406, 9958998880 पर अवश्य सूचित करें।

-: कार्यक्रम :-

प्रथम दिवस दिनांक 9 फरवरी 2019 (शनिवार)

प्रातः- 09:00 बजे से दोपहर - 12:00 बजे तक — यज्ञ, भजन एवं प्रवचन
सांय काल 04:00 बजे से 07:00 बजे तक — यज्ञ, संध्या, भजन, प्रवचन

द्वितीय दिवस दिनांक 10 फरवरी 2019 (रविवार)

प्रातः- 09:00 बजे से दोपहर - 12:00 बजे तक — यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं शंका समाधान

विद्वान वक्ता एवं भजनोपदेशक :- आचार्य सतीश सत्यम, दिल्ली, शुलभा शास्त्री, हापुड़ एवं आचार्य पंडित नवीन शास्त्री, वैदिक पुरोहित, सिरसागंज

कार्यक्रम स्थल : सामुदायिक भवन, बी-ब्लॉक सै0 15, नौएडा

निवेदक एवं कार्यक्रम संयोजक :- निवासी सैक्टर-15, नौएडा

सम्पर्क सूत्र :-

श्री आर. के. ग्रोवर	9899260237, 9871013832	सी-147/15, नौएडा
श्री एन. पी. गुप्ता	9312334195	सी-137/15, नौएडा
श्री विजेन्द्र भाटी	9990685657	बी-122/15, नौएडा
श्री सुरेश अग्रवाल	9818920000	सी-47/15, नौएडा
श्री इन्द्रदेव गुप्ता	8368224406,9958998880	बी-102/15, नौएडा

सामवेद — अथर्ववेद

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित 'आर्यावर्त केसरी' के बचत खाता संख्या- 30404724002 (IFSC कोड : SBIN0000610) में जमा करा सकते हैं, अथवा चैक या धनादेश द्वारा भेज सकते हैं। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएगें। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09412139333

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawartkesari@gmail.com

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', (मोबा : 9456274350)
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मित्र,
डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार,
डॉ. ब्रजेश चौहान, अमित कुमार
मुद्रण- इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य